



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

दांड़ी

छठवां अंक, वर्ष- 2024



कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
गुजरात, राजकोट-360001

महालेखाकार महोदय द्वारा हिंदी पखवाड़ा 2024 का शुभारंभ



हिंदी पखवाड़ा 2024 के दौरान आयोजित हिंदी प्रतियोगिताएं



दांडी परिवार

प्रकाशन

“दांडी”

कार्यालयीन हिंदी गृह-पत्रिका

प्रकाशक

कार्यालय महालेखाकार

(लेखापरीक्षा-1)

एनेक्सी बिल्डिंग,

रेसकोर्स रोड

गुजरात, राजकोट- 360001

दांडी

छठवां अंक, वर्ष-2024

मुख्यपृष्ठ

रानी की वाव

(पाटण-गुजरात)

मूल्य

राजभाषा हिंदी के
प्रति निष्ठा व समर्पण

मुद्रक

अक्षर ग्राफिक - राजकोट

संरक्षक



श्री अनुभव कुमार सिंह
महालेखाकार

प्रधान संपादक



श्री संतोष वी. खेडकर
वरिष्ठ उप-महालेखाकार
(प्रशासन)/ए. एम. जी.-।

मुख्य संपादक



श्री दि. बी. बागुल
उप महालेखाकार
ए. एम. जी.-।।

संपादक



श्री कल्पेश एम. राठोड
उप महालेखाकार
ए. एम. जी.-।।।

सह संपादक



श्री अतुल के. दोशी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(प्रशासन)



श्री संजय कुमार
हिंदी अधिकारी

संपादक मंडल



श्री सुरज कुमार दास
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक



सुश्री नंदनी साव
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक



श्री विशेष कुमार त्रिपाठी
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

अस्वीकरण: पत्रिका में दिए गए लेखों की मौलिकता संबंधी ज़िम्मेदारी तथा उनके द्वारा व्यक्त विचार रचनाकारों के स्वयं के हैं। संपादक का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

हिंदी वार्षिक पत्रिका दांडी का छठवां अंक -2024

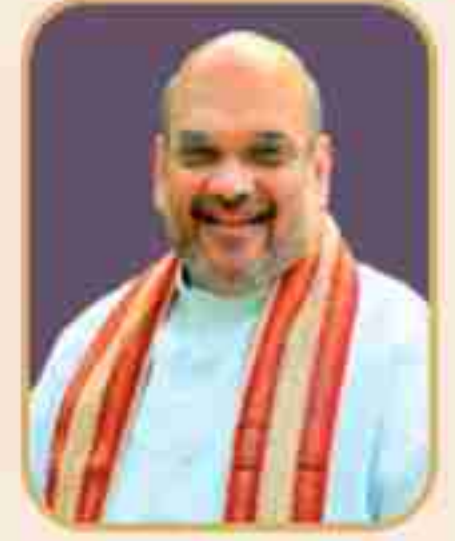
अनुक्रमणिका

क्र.सं.	शीर्षक	अधिकारी-कर्मचारी के नाम / पदनाम	विवरण	पृ.सं.
*	दांडी परिवार			1
*	अनुक्रमणिका			2
*	माननीय श्री अमित जी शाह (गृहमंत्री) का संदेश			3
*	हिंदी पखवाड़ा 2024 के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी			4
*	संदेश - संरक्षक की कलम से	श्री अनुभव कुमार सिंह/महालेखाकार		5
*	संदेश - प्रधान संपादक की कलम से	श्री संतोष वी. खेडकर/वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)		6
*	संदेश - मुख्य संपादक की कलम से	श्री वि. वी. बागुल/उप महालेखाकार (ए.एम.जी.।।)		7
*	संदेश - संपादक की कलम से	श्री कल्पेश एम राठोड/उप महालेखाकार (ए.एम.जी.।।।) अहमदाबाद		8
*	संदेश - हिंदी अनुभाग की कलम से...	श्री संजय कुमार/हिंदी अधिकारी		9
1	राजकोट के दिन: एक संस्मरण	सुश्री अर्चना/सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	10-11
2	ई-कचरे का बोझ सहती धरती माँ	श्री विशेष कुमार त्रिपाठी/कनिष्ठ हिंदी अनुवादक	लेख	12-13
3	कोलकाता वर्तमान घटना से आहत होकर एक लघु रचना	सुश्री विधि त्रिपाठी/पुत्री श्री विशेष कुमार त्रिपाठी/कनिष्ठ हिंदी अनुवादक	कविता	14
4	जीवन का मोल	श्री अमित राज वर्मा/सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	15
5	हिम्मत	श्री गिरीराज/वरिष्ठ लेखापरीक्षक	कविता	16
6	सुख क्या है?	श्री सुरज कुमार दास/वरिष्ठ हिंदी अनुवादक	लेख	17
7	कृत्रिम बुद्धिमत्ता	सुश्री नंदनी साव/कनिष्ठ हिंदी अनुवादक	लेख	18-20
8	सेवानिवृत्त व्यक्ति बनाम फ्यूज़ बल्ब	श्री अमित राज वर्मा/सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	21
9	लेखा नियंत्रक : राष्ट्र निर्माण में निष्पक्षता का स्तंभ	सुश्री प्रीति सिंगारिया/लेखापरीक्षक	कविता	22
10	बिछोह	श्री विशेष कुमार त्रिपाठी/कनिष्ठ हिंदी अनुवादक	कविता	23
11	भारत का डिजिटल सार्वजनिक अवसरचर्या के क्षेत्र में बढ़ता प्रभुत्व	सुश्री अंकिता/लेखापरीक्षक	लेख	24-26
12	संवाद, आभाषी दुनिया से, एक लघुकथा	श्रीमती रीना त्रिपाठी/पत्नी श्री विशेष कुमार त्रिपाठी/कनिष्ठ हिंदी अनुवादक	लेख	27-28
13	प्रसन्नता और हंसी	श्री सुरज कुमार दास/वरिष्ठ हिंदी अनुवादक	लेख	29-30
14	साइबर अपराध	सुश्री प्रीति सिंगारिया/लेखापरीक्षक	लेख	31-33
15	पुरुष सुंदर होते हैं	श्रीमती संध्या कुमारी/पत्नी श्री सुरेन्द्र कुमार/वरिष्ठ लेखापरीक्षक	कविता	34
16	करौली वाला मास्टर	श्री अभिषेक कुमार मीना/सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	35-36
17	दोस्त अब थकने लगे हैं	श्री सुरेन्द्र कुमार/वरिष्ठ लेखापरीक्षक	कविता	37
18	बदलती संस्कृति	सुश्री आस्था दिओरा/लिपिक	लेख	38
19	लेजेंड्स ऑफ गुजरात	श्रीमती पूजा शर्मा/सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	39-43
20	हमराही	नवीन खीची/लेखापरीक्षक	लेख	44
21	हिंदी पखवाड़ा आयोजन - 2024 पुरस्कार विजेताओं की सूची			45-46
22	वर्ष 2023-24 के लिए राजभाषा हिंदी में कार्य करने हेतु प्रोत्साहन राशि विजेताओं की सूची			47
23	आपके द्वारा प्रेषित प्रशंसा पत्र			48-49
24	हिंदी पखवाड़ा 2024 की झलकियां			50-52

अमित शाह

गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री

भारत सरकार



प्रिय देशवासियों।

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

इस वर्ष का हिंदी दिवस समारोह विशेष है, क्योंकि 14 सितंबर, 1940 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि राजभाषा विभाग द्वारा इसे 'राजभाषा हीरक जयंती' के रूप में मनाया जा रहा है।

भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पुरातन सभ्यता और भाषिक विविधता के लिए दुनिया में विशिष्ट स्थान रखता है। क्षेत्रीय भाषाओं ने हमारी अतुलनीय सांस्कृतिक विविधता को आगे बढ़ाने और देशवासियों को भारतीयता के अटूट सूत्र में पिरोने का काम किया है। अतः हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को भारतीय अस्मिता का प्रतीक कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा पर विशेष बल दिया गया था। हिंदी ने तब से लेकर आज तक, देश की विविधता में एकता स्थापित करने और सामूहिक सद्भावना को सुदृढ़ करने का महती कार्य किया है। हिंदी की इसी शक्ति के कारण उन दिनों हिंदी की स्वीकार्यता को बढ़ावा देने वालों में लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, लाला लाजपत राय, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस राजगोपालाचारी एवं अन्य गैर-हिंदीभाषी महानुभावों की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। आजादी के बाद हिंदी की इसी सर्वसमावेशी प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में प्रमुख भारतीय भाषाओं को स्थान दिया।

हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसमें आपको देश की कई भाषाओं के तत्व मिल जाएँगे। इसका इतिहासलिखने वालों ने तो रासो ग्रंथों, सिद्धो-नाथों की वाणियों से लेकर भक्तिकाल के संत कवियों और खड़े बोली तक इसकी परम्परा को माना है। कवि चंदबरदाई से लेकर महाकवि विद्यापति, ज्योतिरीश्वर ठाकुर तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, आंडाल, गुरु नानकदेव जी, संत रैदास, कबीरदास जी से लेकर आज तक कई साहित्यकारों व भाषाविदों ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी का मार्ग प्रशस्त किया। इसके विकास में उन असंख्य लोकभाषाकारों का भी अमूल्य योगदान है, जो गायन-वादन के द्वारा इस भाषा के आदिस को जन-जन तक पहुँचाते रहे। हिंदी भाषा मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, हरियाणवी, राजस्थानी, मेवा गुजराती, छत्तीसगढ़ी, बघेली, कुमाउनी, गढ़वाली जैसी मातृभाषाओं के समन्वित रूप से ही तो बनी है। खुशी है कि हिंदी भाषा इन मातृभाषाओं को अक्षुण्ण रखते हुए आगे बढ़ रही है और लगातार विकसित रही है। आज जब राजभाषा के रूप में हिंदी अपनी 75वीं वर्षगाँठ पूरी कर रही है इसका इतिहास जरूर याद रखना चाहिए।

14 सितंबर, 1949 से लेकर लगातार राजभाषा के रूप में हिंदी के संकेनेकका हुए हैं। राजभाषा विभाग की विशाल यात्रा को पीछे मुड़ कर देखें, तो हमें कई महत्वपूर्ण दिखाई इस विभाग ने जिम्मेदारीपूर्वक सरकारी तंत्र को भाषिक चेतना के प्रति प्रेरित किया है।

साल 1977 में श्रद्धेय **अटल बिहारी वाजपेयी जी** ने तत्कालीन विदेश मंत्री के रूप में पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित कर राजभाषा का मान बढ़ाया। माननीय **प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी** जब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी भाषा में संबोधन देते हैं और भारतीय के उद्गम देते हैं, तो समूचे देश में अपनी भाषा के प्रति गौरव के भाव को और बल मिलता है। बीते 10 वर्षों में हमारी सरकार ने राजभाषा को और भी समृद्ध व सक्षम बनाने के हर संभव कार्य किए हैं। 2018 में अनुवाद टूल कंठस्थ का लोकार्पण हो, 2020 में भारत की नई शिक्षा नीति में मातृभाषाओं को विशेष माहृत्य देते की अनुशंसा हो, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में आधिकारिक भाषाओं की सूची में करमिरी, डोंगरी और हिंदी को शामिल करने के लिए विधेयक पारित करना हो, 2022 में हिंदी दिवस पर कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण हो या साल 2021 से हर साल हिंदी दिवस पर 'अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन आयोजित करना हो, सरकार राजभाषा व भारतीय भाषाओं के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध है। साथ ही, संसदीय राजभाषा समिति ने अपने प्रतिवेदन का 12वाँ खंड भी माननीय राष्ट्रपति महोदय को सौंप दिया है।

राजभाषा में कार्यों को प्रोत्साहन देने हेतु हमने साल 2022 से संशोधित राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना भी शुरू की है जिसके तहत ज्ञान-विज्ञान, अपराध शास्त्र अनुसंधान, पुलिस प्रशासन, संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर एवं विधि के क्षेत्र में राजभाषा में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु पुरस्कार दिए जाते हैं। साथ ही, राजभाषा विभाग ने डिजिटल शब्दकोश 'हिंदी शब्द सिंधु' का निर्माण भी किया है।

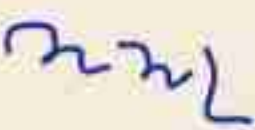
दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के माध्यम से जन-जन तक संवाद स्थापित करते हुए राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित की जाए। यह अत्यंत आवश्यक है कि हम व्यापक रूप से सरल और सहज भाषा का प्रयोग करके राजभाषा और जनभाषा के बीच की दूरी को पाटें, ताकि देश के हर वर्ग का नागरिक देश की प्रगति से परिचित भी हो और लाभान्वित भी। इस तरह 'आत्मनिर्भर भारत' व 'विकसित भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारी भारतीय भाषाओं की सशक्त भूमिका रहने वाली है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी दिवस एवं राजभाषा हीरक जयंती समारोह, मातृभाषाओं के प्रति राजभाषा विभाग की प्रतिबद्धता को और भी ऊँचाई देने का सार्थक माध्यम बनेगा। मैं राजभाषा विभाग के कार्यों की सराहना करते हुए हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

वंदे मातरम।

नई दिल्ली

14 सितंबर 2024


अमित शाह



हिंदी पखवाड़ा 2024 के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन





संरक्षक की कलम से...

हमारे कार्यालय की गृह पत्रिका **"दांडी"** के षष्ठम अंक को प्रकाशित करते हुए मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है। पूर्व अंक की भांति इस अंक में भी कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपनी साहित्यिक प्रतिभा का परिचय दिया है, कार्यालयी कार्यों की अधिकता के बावजूद सभी कार्मिकों ने निबंध लेखन, कविता लेखन आदि में सराहनीय कार्य किया है। हिंदी में साहित्य लेखन के अतिरिक्त हमारे कार्यालय के अधिकारी/कर्मचारी अपना कार्यालयी कार्य हिंदी में करने का भरसक प्रयास करते हैं।

"दांडी" में हिंदी को गौरव प्रदान करने वाले सभी रचनाकारों, संपादकों, जिन्होंने "दांडी" के संपादन में अपना सहयोग प्रदान किया है, उनके योगदान के लिए उन्हें बधाई देता हूँ। आशा करता हूँ कि भविष्य में भी हमारी पत्रिका उत्तरोत्तर प्रगति करेगी। आशा है कि आपको हमारा प्रयास सार्थक लगेगा। कृपया अपने सुझावों से हमें अवगत कराएं। प्राप्त सुझाव एवं प्रतिक्रियाएँ हमारा उचित मार्गदर्शन करती हैं और पत्रिका को सुरुचिपूर्ण, संग्रहणीय एवं पठनीय बनाने में उल्लेखनीय भूमिका निभाते हुए प्रेरित करती हैं।

"दांडी" पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

अनुभव कुमार सिंह
महालेखाकार



प्रधान संपादक की कलम से...

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं उत्थान के लिए पत्रिका प्रकाशन एक सशक्त माध्यम है। इसी क्रम में इस कार्यालय द्वारा **"दांडी"** पत्रिका के षष्ठम अंक का प्रकाशन किया जा रहा है, जो कि अत्यंत सराहनीय है। इस कार्यालय के अधिकतर अधिकारियों - कर्मचारियों का हिंदी भाषा का ज्ञान सीमित है, फिर भी पत्रिका प्रकाशन में उनका सहयोग निरंतर मिलता रहा है, इसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं।

किसी भी उपलब्धि का मूल आधार परिश्रम व दृढ़ इच्छाशक्ति होती है। हमारे रचनाकार इस कसौटी पर खरे उतरे हैं एवं राजभाषा के उत्थान व प्रचार-प्रसार में प्रयासरत हैं। पत्रिका का मूल उद्देश्य अधिकारियों/कर्मचारियों की सृजनात्मक शक्ति एवं अभिव्यक्ति कौशल में वृद्धि करना है।

मैं आशा करता हूँ कि सभी अधिकारी एवं कर्मचारी कार्यालय के दैनिक कार्यों में हिंदी को अधिकाधिक महत्व देंगे, जिससे हम हिंदी को वह स्थान दे सकेंगे, जिसकी वह स्वतंत्र भारत में हकदार हैं।

वेदना ल्यथे

संतोष वी खेडकर
वरि.उपमहालेखाकार (प्रशासन)
ए.एम.जी-I



मुख्य संपादक की कलम से...

भाषा के बिना मानव जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती, क्योंकि भाषा का संबंध संस्कृति और संस्कारों से हैं। भाषा मनुष्य एवं पशु के बीच भेद करती है एवं हमारे जीवन शैली, रीति-रिवाजों आदि का अभिन्न अंग है। राजभाषा को बढ़ावा देने हेतु हमारे कार्यालय की गृह पत्रिका **"दांडी"** के षष्ठम अंक को प्रकाशित किया जा रहा है।

इस पत्रिका के माध्यम से हम अपने विचारों को लिपिबद्ध करके यह भी स्थापित करने का प्रयास करते हैं कि हिंदी मधुर होने के साथ-साथ एक वैज्ञानिक एवं तकनीकी रूप से समृद्ध भाषा भी है।

इसी कारण भारतीय संविधान में राजभाषा का स्थान प्राप्त हिंदी सहजता से वृहदत्तर क्षेत्र में पहुँच जाती है।

वास्तव में इस पत्रिका का उद्देश्य कार्यालय के काम में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना है। **"दांडी"** पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

व्हि. बी. बागुल

उप महालेखाकार/ ए.एम.जी-II



संपादक की कलम से...

14 सितंबर 1949 को संविधान द्वारा हिंदी को राजभाषा का दर्जा मिलने के बाद से आज हीरक जयंती तक, हिंदी की यह विकास यात्रा अत्यंत स्वर्णिम और सर्वांगीण रही है। आज हिंदी दिवस की हीरक जयंती पर हम गर्व के साथ इसे याद करते हैं। यह हम सभी का संवैधानिक कर्तव्य है कि हम कार्यालयीन कार्यों में सरल हिंदी का अधिकतम प्रयोग कर राजभाषा के संवर्धन में अपना योगदान दें। कार्यालय के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों ने हिंदी के इस उद्देश्य को सफलतापूर्वक पूरा करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। न केवल वे कार्यालय में हिंदी का नियमित उपयोग करते हैं, बल्कि प्रत्येक वर्ष हिंदी दिवस के आयोजन पर हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में भी बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं।

यह सभी की सामूहिक मेहनत और उत्साह का परिणाम है कि हिंदी को कार्यालय में अधिक सशक्त और प्रभावी तरीके से स्थापित किया जा रहा है, और यह हम सभी के लिए गर्व की बात है। हमारे प्रयासों से राजभाषा हिंदी को कार्यालयीन कामकाजी भाषा के रूप में प्रगति के नए आयाम मिले हैं। हिंदी का प्रचार-प्रसार केवल हमारे देश की एकता और अखंडता को मजबूत नहीं करता, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक धरोहर को भी संजोने का एक सशक्त माध्यम बनता है। हिंदी का सही उपयोग न केवल कार्यकुशलता में वृद्धि करता है, बल्कि यह हमारे संवाद की गुणवत्ता को भी बेहतर बनाता है।

आशा है कि हम सभी मिलकर हिंदी के इस गौरवमयी सफर को और आगे बढ़ाएंगे और राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान लगातार बढ़ाते रहेंगे। हिंदी को सम्मान देने की यह यात्रा निरंतर जारी रहे, यही हमारी प्रतिबद्धता होनी चाहिए। इस अवसर पर हम सब यह प्रण लें कि कार्यालय कार्यों में हिंदी का उपयोग बढ़ाने और इसे पूरी तरह से प्रभावी बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। यह हम सभी के सामूहिक प्रयासों से ही संभव हो सकता है कि हिंदी को हमारी भाषा न केवल कार्यालय में बल्कि समाज में भी सर्वोत्तम स्थान प्राप्त हो।

मैं महालेखाकार महोदय का आभार व्यक्त करता हूं, जिन्होंने "दांडी" के छठे अंक के प्रकाशन में अपना बहुमूल्य मार्गदर्शन प्रदान किया है। कार्यालय की वार्षिक पत्रिका "दांडी" का छठा अंक पाठकों को इस आशा के साथ समर्पित है कि "दांडी" पत्रिका को और सार्थक एवं प्रभावशाली बनाने हेतु आप सभी के बहुमूल्य सुझाव मिलते रहेंगे।

कल्पेश राठोड

कल्पेश एम राठोड
उप महालेखाकार/ए. एम. जी.-III
शाखा कार्यालय अहमदाबाद



हिंदी अनुभाग की कलम से...

कार्यालय की वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका "दांडी" के षष्ठम अंक को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अति प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

राजभाषा के प्रसार के कदम में कार्यालय के अधिकारियों - कार्मिकों एवं उनके परिवार के सदस्यों द्वारा अप्रतिम सहयोग प्राप्त हुआ है।

भाषा मनुष्य के हृदय की भावनाओं की अभिव्यक्ति है तथा राजभाषा हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बन चुकी है। इसके गुणोत्तर विकास के लिए हम सभी दिन रात प्रयासरत हैं। प्रस्तुत पत्रिका के विकास हेतु आप सभी के सुझाव हमारे लिए नवीन ऊर्जा का कार्य करते हैं।

अतः आपके संदेशों की प्रतीक्षा में....

संजय कुमार
हिंदी अधिकारी

राजकोट के दिन: एक संस्मरण



सुश्री अर्चना
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

राजकोट, रंगीला राजकोट! सौराष्ट्र के दिल में बसा शहर राजकोट, भारत के उत्तर पश्चिम भाग में बसा राजकोट। मध्य भारत के करीब, उत्तर भारत के भी नजदीक, साथ ही दक्षिण भारत से भी ज्यादा दूर नहीं, विभिन्न रंग लिए हुए रंगीला राजकोट।

1, फरवरी 2024 को पहली बार राजकोट शहर में आना हुआ, अंदेशा नहीं था कि आना होगा। 31 जनवरी की दोपहर जब अहमदाबाद कार्यालय ने आदेश जारी किया तो पता चला जाना होगा राजकोट। एक शहर जिसका बस नाम सुना था अब वहाँ अपनी जरूरत का सारा सामान लेकर पहुँचना होगा, वहीं नया घरोंदा बनाना होगा। पर है कहाँ राजकोट? कैसा है राजकोट? मेरे लिए कैसा होगा राजकोट? शंकाओं के साथ अगली सुबह की बस की टिकट करके दोपहर तक आना हुआ राजकोट, अकेले नहीं थी तो सफर भी बुरा नहीं था, थोड़े व्यक्ति थे जिन्हें मैं थोड़ा जानने लगी थी, उनके साथ उस शहर जा रही थी जिसे मैं बिल्कुल नहीं जानती थी। पर जाना हुआ, तो जानना भी हुआ।

जब बस से उतरे तो नजारा काफी धूमिल था, धूल ही धूल। उत्तरी भारत में पले बड़े एक व्यक्ति के लिए जिसने 1 फरवरी की ठंड से बचने के लिए कोट पहना था और साथ ही एक और ऊनी कपड़ों से भरा सूटकेस था, सब बस से उतरते ही पसीने से तरबदर था। कदम रखते ही राजकोट के गरम मौसम का अंदेशा हुआ, पर एक व्यक्ति जिसे सर्द ऋतु बेहद पसंद है, फरवरी की ये गर्मी उसे कहाँ रास आनी थी, परंतु पहुँच तो गए थे राजकोट।

थोड़ी प्रतीक्षा के बाद कार्यालय तक पहुँचने के लिए वाहन का बंदोबस्त हुआ, क्योंकि व्यक्ति और सामान दोनों ही मात्रा में ज्यादा थे और इसी तरह कार्यालय पहुँच गए। गूगल पर कार्यालय की फोटो पहले ही तलाशी जा चुकी थी, मन है ही जिज्ञासु तो उतना तो करना ही था। पहुँचे कार्यालय, देखा कार्यालय और चल दिये प्रशासनिक अनुभाग की ओर, दोपहर से पहले कार्यालय में कार्यग्रहण भी तो करना था। औपचारिकताएँ की, कार्यग्रहण किया, अब क्या? परंतु अभी तो सब रहता है, अभी तो बस एक कार्य पूरा हुआ है और बचे हुए कार्य करने के लिए जरूरत थी खाने की। बाहर निकले तो पता चला सब भोजनालय बंद थे। ऐसा क्यों? क्या आज कोई अवकाश है? जिसका हमें पता नहीं, या फिर कोई और कारण है? घूम फिर कर पता चला कि दोपहर में विश्राम करता है राजकोट, विश्राम तो हर किसी को ही पसंद है, मुझे तो है ही, चलो बुरा नहीं है राजकोट। खाना भी आखिरकार मिल ही गया था और ठीक ही था। शाम को ऑफिस की बाकी औपचारिकताएँ पूरी की गई, और साथ ही मुझे मिला मेरा अनुभाग। कल सुबह अनुभाग में कार्यग्रहण करना था, उस समय अंदेशा नहीं था, कितने अनुभाग हैं? किसमे क्या होता है? कैसे होता है? पर 2 फरवरी और उसके बाद भी यही जानना और जानते रहना था। ऑफिस के बाद भी तो कहीं जाना था, तो जगह ढूँढी गई, पास के होटल में रुका गया, शाम में गुजराती खाना खाया। अब अगली सुबह अनुभाग में जाकर नए लोगों से मिलना हुआ, जानना हुआ। ठीक ही जा रहा था सब। पर होटल में



कितने दिन रहा जा सकता था। एक जगह भी तो ढूँढनी थी जिसे अंजान से थोड़ा जाना पहचाना बन चुके शहर में 'घर' कहा जा सके, जहाँ हर शाम वापस जाया जा सके। तो अब सुबह शाम कार्यालय और समय मिलने पर रहने के लिए जगह ढूँढी जा रही थी, खाने का भी जैसे तैसे चल ही रहा था। कभी कार्यालय के भोजनालय में, कभी बगल के जी.एस.टी. कार्यालय के भोजनालय में, तो कभी कहीं बाहर के जायके लिए जा रहे थे।

अब सप्ताह का अंत हो रहा था, 2 दिन का अवकाश आ रहा था और वो अवकाश होटल के उस कमरे में तो नहीं बिताना था, तो शुक्रवार शाम को एक पी.जी. ढूँढा, घर तो नहीं पर एक ठिकाना मिल चुका था। अब दो दिन एक नयी जगह में अकेले ज्यादा सुखद तो नहीं थे, पर एक व्यक्ति जिसे खुद का साथ पसंद है उसक लिए ज्यादा बुरे भी नहीं थे। दो दिन तो काटे जा सकते थे, और काटे गए।

सोमवार आ गया कार्यालय जाना था, अब तो हर सुबह ऐसी ही होने वाली थी। हफ्ते के 5 दिन कार्यालय, 2 दिन अवकाश। परंतु जीवन इतना भी नीरस नहीं था, राजकोट रास आ रहा था। आसपास के व्यक्ति मात्र जानकार से मित्र हो गए थे, अनुभाग के सहकर्मी, केवल सहकर्मी से परिचित हो गए थे, अपने अनुभाग के लोग हो गए थे। कार्यालय के व्यक्ति जिन्हें मैंने मात्र देखा भर था, अब वो अपने कार्यालय के लोग हो गए थे। वो कार्यालय जिसे एक दिन गूगल पर देखा था, अब वो हर सुबह की मंजिल हो गया था। कार्यालय की कैंटीन की, अनुभाग के भीतर की बातों की, किसी की सेवा निवृत्ति की, कार्य की, अच्छे बीते समय की कितनी ही यादें हैं राजकोट की। कार्यालय के बाहर भी राजकोट है, हाँ मुझे ज्ञात है, कि कार्यालय राजकोट में है। परंतु फिर भी जितना राजकोट घूमा, जाना उतने ही राजकोट के रंग सुहाए।

राजकोट का न्यारी बांध, अपने नाम की तरह न्यारा। शहर से थोड़ा दूर और बहुत सुंदर। वहाँ की शांति, हरे भरे उद्यान, शांत खड़ा पानी, उसमें मछलियाँ, ऊपर उड़ते पक्षी, श्याम का सुनहरा सूर्यास्त और ठंडी पवन। रोटरी अंतर्राष्ट्रीय गुड़िया संग्रहालय, बच्चों के काम की जगह है। बड़ों के भी काम आ सकती है, बशर्ते आपके अंदर का बालक जीवित हो। महात्मा गांधी म्यूज़ियम भी है साहित्य प्रेमियों के लिए, बल्कि हर व्यक्ति के लिए। कुछ दिन गुजार रहे हो गुजरात में, तो गांधी जी के जीवन को तो और करीब से जानना बनता ही है। जगह भी साफ सुथरी है, धरोहर को अच्छे तरीके से सँजोया गया है, इमारत की वास्तुकला भी काफी सुंदर है।

आजी नदी पर बना आजी बांध, अगर गूगल ने आपको गलत रास्ता नहीं दिखाया और आप सही जगह पहुँच गए तो पाओगे कि जगह तो काफी अच्छी है। यह बांध न्यारी से थोड़ा नया एवं बड़ा है। शहर से दूर, बांध के आस पास निकलोगे तो खाली और शांत जगह पाओगे, जहाँ बैठा जा सकता है, बैठ के कुछ सोचा जा सकता है। प्रद्युमन प्राणी उद्यान, हरियाली एवं विभिन्न प्राणियों से भरपूर, जिसमें एक मछलीघर भी है, खाने की व्यवस्था भी है और एक बार जाने के लिए अच्छी जगह है। रेसकोर्स पार्क तो हर समय ही जीवंत रहता है, हर शाम वहाँ चहल पहल रहती है। शाम में लगने वाले झूले, विभिन्न प्रकार के खेलों के लिए ट्रैक, खुले बड़े पार्क जहाँ सप्ताह अंत में अनेक परिवार बैठकर समय बिताते हैं। रेसकोर्स में राजकोट दिखता है। शहर के बीचों बीच है स्वामीनारायण मंदिर और उसका शुद्ध शाकाहारी भोजनालय। राजकोट के लोग खाने के भी काफी शोकीन हैं यहाँ गोला, आइसक्रीम, पान का काफी प्रचलन है। राजकोट के मौसम का तो जिक्र बनता ही है, पहली चीज थी जो पसंद नहीं आई थी और अब पसंदीदा चीज है। जब जून माह में उत्तर भारत गर्मी से झुलस रहा था, राजकोट में हर शाम शीतल हवाएँ चलती थी, राजकोट की सुगंध और उसके रंग लिए हुए एक व्यक्ति जो शीतल हवाओं को पसंद करता है उसको तो अंततः पसंद आना ही था राजकोट। अब पाँच माह बाद राजकोट घर सा है। अब घर जाओ तो ख्याल आता है राजकोट का, उन लोगों का जिनसे राजकोट में मिलना हुआ, जिन्हें राजकोट में जानना हुआ। रंगीला तो है राजकोट !





श्री विशेष त्रिपाठी
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

ई-कचरे का बोझ सहती धरती माँ

यदि दुनिया भर के ई-कचरे को ट्रकों में भरकर एक कतार में खड़ा किया जाए, तो ये भूमध्य रेखा के चारों ओर एक लाइन बना सकते हैं...

एक दिन अचानक अपने घर की साफ सफाई करते हुए घर की आलमारियों से कुछ पुराने खराब पड़े हुए मोबाइल फोन, तथा अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरण निकले। इनको देखकर मन में एक विचार आया कि इन इलेक्ट्रॉनिक कचरों का क्या किया जाए? क्या इन उपकरणों का स्कैप या पुनर्चक्रण संभव है? यदि नहीं तो क्या इनको ऐसे ही फेंक दिया जाए ?? इन सारे प्रश्नों से उद्वेलित होकर मन में एक विचार आया कि ई-कचरे की समस्या पर आप सभी को रूबरू कराया जाये।

वर्तमान युग तकनीक का है। तकनीक ने मानव जीवन को एक नया आयाम दिया है, सहूलियतें प्रदान की हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है। किन्तु इस तकनीक से उत्पन्न ई-कचरा आज समस्त विश्व के समक्ष एक नयी चुनौती के रूप में विद्यमान है, इससे भी इंकार नहीं किया जा सकता है। हम सब मोबाइल, टेबलेट, लैपटॉप जैसे अन्य संयंत्रों को खराब होने पर यु ही कचरे में डाल देते हैं, कारण है उनका पुनः प्रयोग में न ला पाना। इस कारण पृथ्वी पर दिन ब दिन लाखों टन ई-कचरा एकत्र होता जा रहा है जो वातावरण का गला घोट रहा है।

ई-कचरे पर संयुक्त राष्ट्र की **"द ग्लोबल ई-वेस्ट मॉनिटर -2024"** रिपोर्ट के अनुसार वैश्विक स्तर पर सालाना 6.2 करोड़ टन इलेक्ट्रॉनिक कचरा पैदा हो रहा है तथा वर्ष 2010 के बाद से इसमें 82 फीसदी की बढ़ोत्तरी हुई है। यदि ई-कचरा में इसी तरह वृद्धि होती रही तो वर्ष 2030 तक इसमें 92 फीसदी की वृद्धि के साथ बढ़कर यह 8.2 करोड़ टन तक पहुँच सकता है। ई-कचरा प्रतिवर्ष 23 लाख टन की दर से बढ़ रहा है। परिणामतः जिन इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों ने हमारा जीवन आसान बनाया है, अब वे ही हमारी ज़िंदगी में जहर घोल रहे हैं।

यह समस्या शुरू होती है, ई-कचरे का सही तरीके से संग्रहण और पुनर्चक्रण के न होने से, जिससे मिट्टी, हवा और पानी दूषित होकर जहरीले हो रहे हैं समस्त विश्व में कुछ ही ऐसे देश हैं जिनके पास ई-कचरा प्रबंधन प्रणाली है किन्तु बहुत देशों में इनका संग्रहण और पुनर्चक्रण का उचित प्रबंधन नहीं किया जा रहा है। संयुक्त राष्ट्र के रिपोर्ट के मुताबिक 2022 में उत्पन्न हुए ई-कचरे का सिर्फ 22.3 प्रतिशत हिस्सा ही एकत्रित हो पाया था।

वर्ष 2030 तक इसके संग्रहण और पुनर्चक्रण की दर घटकर मात्र 20 फीसदी रह जाएगी। दुनिया का करीब एक तिहाई यानी 2000 करोड़ किलोग्राम ई-कचरा खिलोनौ, माइक्रोवेव ओवन, वैक्यूम क्लीनर और ई-सिगरेट जैसे छोटे उपकरणों से पैदा हो रहा है जिस प्रकार से जलवायु परिवर्तन पूरी दुनिया के सामने एक समस्या है, ठीक उसी तरह से ई-कचरा भी पूरे विश्व की समस्या है। दुनिया में ई-कचरे की मात्रा कितनी ज्यादा है,

इसका अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि अगर इस ई-कचरे को 40 मेट्रिक टन क्षमता के ट्रकों में भरा जाए तो इसके लिए करीब 15.5 लाख से ज्यादा ट्रकों की आवश्यकता होगी। इन ट्रकों को यदि एक कतार में खड़ा किया जाये तो ये भूमध्य रेखा के चारों तरफ एक लाइन बना सकते हैं। इन कचरों को नदियों में बहा दिया जाता है या मिट्टी में दबाया जा रहा है जिससे पर्यावरण के साथ साथ जीव जंतुओं को भी नुकसान हो रहा है और इसका प्रमुख कारण है ई-कचरे के पुनर्चक्रण की समुचित व्यवस्था का ना हो पाना।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट चिल्ड्रेन एंड डिजिटली कनेक्टेड साइट के मुताबिक 1.29 करोड़ महिलाएं ई-कचरे से जुड़े क्षेत्र में काम करती हैं। ये महिलाएं या तो ई-कचरा इकट्ठा करती हैं या इनके पुनर्चक्रण कार्य में लगी हुई हैं। ई-कचरे के संपर्क में आने से इनका स्वास्थ्य तो प्रभावित होता ही है साथ इन महिलाओं के गर्भ में पल रहे बच्चों पर भी गंभीर असर पड़ता है। इसी तरह करीब 1.8 करोड़ बच्चे और किशोर, जिसमें से कई पांच वर्ष से भी कम आयु के हैं, भी इस काम में जुड़े हुए हैं। ई-कचरे में मौजूद शीशा और पारा इन बच्चों की दिमागी क्षमता को भी नुकसान पहुंचा रहा है यदि ई-कचरे का उचित पुनर्चक्रण की व्यवस्था हो जाये तो इससे करोड़ों रुपये की धातुओं को अलग किया जा सकता है साथ ही गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं से भी बचा जा सकता है। भारत ई-कचरा पैदा करने के मामले में विश्व में तीसरे नंबर पर है तथा 2022-23 में करीब 32 लाख टन कचरे का उत्पादन किया है।

वर्ष 2021 से 2022 तक भारत में 16 लाख टन ई-कचरा पैदा हुआ था जबकि 2030 तक भारत में 1.4 टन ई-कचरा होने का अनुमान है। भारत ने इस समस्या से निपटने के लिए कई कदम उठाए हैं। देश में स्कैप पॉलिसी के तहत सरकार ने 2022 में मोबाइल फोन, लैपटॉप, फ्रीड्रिज, ए.सी., टीवी समेत 134 इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के उपयोग की अंतिम तिथि (एक्स्पायरी डेट) तय कर दी। इसके बाद इनका उपयोग बंद करना होगा। जिस प्रकार पुराने वाहनों का स्कैप का कार्य रिसाइक्लिंग एजेंसी कर रही है उसी प्रकार एलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के कलेक्शन और स्कैप का काम भी निजी संस्थाएं कर रही हैं। ई-कचरे की बढ़ती मात्रा पृथ्वी के लिए हानिकारक है।

इसलिए इस पर अंकुश लगाने के साथ-साथ इनके बेहतर रिसाइक्लिंग का भी ठोस इंतजाम करना होगा ताकि हम पृथ्वी के अनमोल संसाधनों का न सिर्फ सावधानीपूर्वक प्रयोग कर सकें अपितु पर्यावरण का भी ध्यान रख सकें। यह बात सत्य है कि तकनीक ने मानव जीवन को अनगिनत सहूलियतें प्रदान करके, हमारे जीवन को सुगम बनाया है किन्तु हमें इनसे लाभान्वित होने के साथ-साथ अपने पर्यावरण को साफ-सुथरा रखने का भी प्रयास करना होगा ताकि हमारी आने वाली पीढ़ियाँ भी पृथ्वी पर सुरक्षित जीवन जीने का लाभ उठा सकें। सरकार के साथ-साथ हम नागरिकों को भी अपनी जिम्मेदारियाँ बखूबी निभानी होंगी।

प्रकृति का न करे हरण, आओ बचाये पर्यावरण !!!





सुश्री विधि त्रिपाठी
पुत्री श्री विशेष कुमार त्रिपाठी,
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

कोलकाता की वर्तमान घटना से आहत होकर एक लघु रचना...

तनया, अब बनो दुर्गा होकर निडर
सता न सके तुम्हें किसी का डर।

साहस स्वयं में भरो, उठाओ अब शस्त्र
देख लिया तुमने अब पढ़ कर शास्त्र।

छल न सके दुश्मन कोई कैसा भी
जो बन खतरा पास मंडराए कोई भी ।

काट दो कृपाण से उसका सर।

बहुत हुआ बन के पिघली मोमबत्ती अब
बन प्रचंड ज्वाला दिखाओ दुनिया को अब

न खींच सके दुपट्टा अब तुम्हारा कोई
न हो कोई मोमिता, न निर्भया कोई
न कर सके दुस्साहस खलनायक कोई

फाड़ के सीना बहा दो लहू उसका
तनया, कि रक्षा को तुम्हारे अब
न आयेगा फिर से कन्हैया कोई ।





जीवन का मोल



श्री अमित राज वर्मा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

एक बार भगवान बुद्ध विचरण करते हुए एक गांव में पहुंचे। वहां उनसे एक व्यक्ति ने पूछा, '**जीवन का मूल्य क्या है ?**' बुद्ध ने उसे एक चमकता हुआ पत्थर दिया और कहा, "**पहले इसका सही मूल्य पता करके आओ, लेकिन ध्यान रखना इसको बेचना नहीं है।**

वह आदमी बाजार में एक केले वाले के पास गया और उसे पत्थर दिखाते हुए उसकी कीमत पूछी। केले वाले ने चमकीले पत्थर को देखकर कहा, '12 केले ले जा और यह मुझे दे दो'। आगे एक सब्जी वाले ने उस पत्थर की कीमत एक बोरी आलू लगाई। इसके बाद वह सोना बेचने वाले की दुकान पर गया उसे पत्थर दिखाया तो उसने झट कहा, 'इसकी कीमत तो लाखों में है।' उस व्यक्ति ने मना कर दिया तो सुनार ने कहा, 'तुम बताओ इसका क्या लोगे, मुंहमांगी कीमत दूंगा।' उस आदमी ने सुनार से कहा, "**मेरे गुरु ने इसे बेचने से मना किया है।**

आगे वह हीरे बेचने वाले एक जौहरी के पास गया। जौहरी ने जब उस चमकीले पत्थर को देखा, तो उसने पहले एक लाल कपड़ा बिछाया फिर उस पर चमकीले पत्थर को रखा और उसकी परिक्रमा की और माथा टेका, फिर बोला, "कहां से लाए हो, यह बेशकीमती रूबी ?" वह आदमी हैरान-परेशान सा बुद्ध के पास लौटा। उन्हें पूरी कहानी सुनाई और बोला, **अब बताओ भगवान, मानवीय जीवन का मूल्य क्या है?**

बुद्ध बोले, '**केले वाले ने इस पत्थर की कीमत 12 केले बताई, सब्जी वाले ने 1 बोरी आलू, सुनार ने लाखों रुपये कीमत लगाई और जौहरी ने इसे बेशकीमती माना। ठीक यही स्थिति तुम्हारे जीवन की भी है। तू बेशक हीरा है, लेकिन ध्यान रखना कि सामने वाला तेरी कीमत अपनी औकात, अपनी जानकारी, अपने स्वार्थ और अपनी समझ से ही लगाएगा।'** अब वह व्यक्ति जीवन का मूल्य समझ चुका था। उसने बुद्ध के चरणों में माथा टेका और घर लौट गया।

हिम्मत



श्री गिरीराज
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

पकी हुई फ़सल बाढ़ में बहने के बाद भी
दुबारा फ़सल उगाने की हिम्मत है तो,
समझ लीजिये आपने कुछ नहीं खोया है ।

सभी अंगों के विक्षिप्त होने के बाद भी
अगर जीने की हिम्मत है तो,
समझ लीजिये आपने कुछ नहीं खोया है ।

हिरोशिमा व नागाशाकी में परमाणु विप्लव के बाद भी
धरा में नये जीवन देने की हिम्मत है तो,
समझ लीजिये आपने कुछ नहीं खोया है ।

एकमात्र घोंसले के टूट जाने के बाद भी
चिड़िया में नये घोंसला बनाने की हिम्मत है तो,
समझ लीजिये आपने कुछ नहीं खोया है ।

सब कुछ खोने के बाद भी अगर
आपमें कुछ करने की हिम्मत है तो,
समझ लीजिये आपने कुछ नहीं खोया है ।



**दो पंक्तियाँ ए.जी. ऑफिस सहकर्मियों के लिये -
अथक प्रयासों के बाद भी**

अगर आपका पैरा रिपोर्ट में जगह न बना पाए
किन्तु आप में दुबारा रिपोर्ट बनाने की हिम्मत है तो
समझ लीजिये आपने कुछ नहीं खोया है ।

सुख क्या है?



श्री सुरज कुमार दास
वरिष्ठ अनुवादक

मेरा जीवन समान्यतः सुखी रहा। मैंने अक्सर सोचा है कि वह क्या है जिसे प्राप्त कर लोग सुखी महसूस करते हैं- सुखी होने के लिए मनुष्य को क्या करना चाहिए ?

पहली बात : सबसे महत्वपूर्ण स्वास्थ्य है। यदि आप स्वस्थ न रहें, तो कभी सुखी नहीं होंगे। हर बीमारी, वह चाहे जितनी मामूली क्यों न हो, आपके सुख में से थोड़ा-सा हिस्सा जरूर काट लेगी।

दूसरी बात : बैंक में अच्छी रकम होनी चाहिए। जरूरी नहीं कि यह करोड़ों में हो, लेकिन इतनी जरूर हो कि आपकी आवश्यकताएं पूरी कर सके, और मनोरंजन के लिए भी कुछ बचा रहे- जैसे बाहर खाना-पीना, सिनेमा देख सकना, घूमने-फिरने के लिए पहाड़ों या समुद्र के किनारे जा पाना। धन की कमी मनुष्य को मारने लगती है, उसका आत्मविश्वास घटने लगता है। किसी से उधार मांगना या कर्जा लेकर जिंदगी बसर करना उसे नीचे गिराता है और खुद अपनी आँखों में अपनी इज्जत खत्म कर देता है।

तीसरी : घर अपना होना चाहिए। किराए के घर में आपको आराम और सुरक्षा नहीं मिल सकती। घर में अगर बगीचा भी हो, तो कहना ही क्या ! इसमें अपने पेड़-पौधे लगाइए, उन्हें फलता-फूलता देखिये और प्रकृति के साथ एकता महसूस कीजिए।

चौथी : एक समझदार साथी, चाहे तो यह आपकी बीवी हो- या पति- या कोई दोस्त।

पांचवां : उन लोगों से ईर्ष्या करना बंद कीजिए जो जिंदगी में आपसे ज्यादा आगे निकल गए हैं- ज्यादा बड़ा पद हासिल कर लिया है, ज्यादा कमा लिया है या ज्यादा यश प्राप्त कर लिया है। ईर्ष्या बहुत खराब पैदा करती है- दूसरों से अपनी तुलना मत कीजिए।

छठा : लोगों को सिर्फ गपशप करने के लिए अपने पास मत आने दीजिये। जब वे उठेंगे तो आप न सिर्फ थकान महसूस करेंगे बल्कि उनका जहर भी आप में भर जाएगा।

सात : एक-दो ऐसी हॉबि विकसित कीजिए जिनसे आपको पूर्णता महसूस हो- बगीचे में काम करना, पढ़ना-लिखना, चित्र बनाना, खेलना या संगीत सुनना। ऐसी बातों में मन लगाइए जिनसे आपको सुख मिले।

आठ : हर रोज सवेरे और शाम पंद्रह मिनट अपने बारे में सोच-विचार करने में लगाइए। सवेरे दस मिनट शांत बैठिए और पाँच मिनट सूची बनाइए कि आज आपको क्या-क्या काम करना हैं। इसी तरह शाम को भी पाँच मिनट शांत बैठिए, फिर दस मिनट सोचिए कि आज का काम ठीक से हुआ या नहीं।

नौ : अपना नियंत्रण कभी मत खोइए। गुस्सा मत कीजिए, हर बात पर भड़किए मत, न बदला लेने का विचार कीजिए। अगर किसी ने कुछ कह-सुन दिया हो, तो उसे भूल जाइए। सामान्य रूप से आराम से रहने के लिए आपका धनी होना जरूरी नहीं है, न बड़े पद पर होना- अच्छा स्वास्थ्य और आर्थिक सुरक्षा जरूरी है।



कृत्रिम बुद्धिमत्ता

सुश्री नंदनी साव
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) कंप्यूटर विज्ञान का वह क्षेत्र है जो आम तौर पर मानव बुद्धि से जुड़ी संज्ञानात्मक समस्याओं को हल करने के लिए समर्पित है, जैसे कि सीखना, निर्माण और छवि पहचान। आधुनिक संगठन स्मार्ट सेंसर, मानव-निर्मित सामग्री, निगरानी उपकरण और सिस्टम लॉग जैसे विविध स्रोतों से बड़ी मात्रा में डेटा एकत्र करते हैं। AI का लक्ष्य स्व-शिक्षण प्रणाली बनाना है जो डेटा से अर्थ प्राप्त करती है। फिर, AI उस ज्ञान को मानव-समान तरीकों से नई समस्याओं को हल करने के लिए लागू कर सकता है। उदाहरण के लिए, AI तकनीक मानवीय बातचीत का सार्थक रूप से जवाब दे सकती है, मूलचित्र और पाठ बना सकती है, और वास्तविक समय के डेटा इनपुट के आधार पर निर्णय ले सकती है।

विभिन्न क्षेत्रों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के अनुप्रयोग :

स्वास्थ्य देखभाल : इसका उद्देश्य उपचार की सटीकता को बढ़ाना, व्यक्तिगत उपचार को सक्षम बनाना, रोगी के परिणामों में सुधार करना, स्वास्थ्य देखभाल को सुव्यवस्थित करना तथा चिकित्सा अनुसंधान एवं नवाचार में तेज़ी लाना है। हाल ही में इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (ICMR) ने "जैव चिकित्सा अनुसंधान और स्वास्थ्य देखभाल में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के क्षेत्र में नैतिक आचरण सुनिश्चित करने हेतु दिशा-निर्देश" जारी किये, जो स्वास्थ्य क्षेत्र में नैतिक आचरण सुनिश्चित करने हेतु 10 प्रमुख रोगी-केंद्रित नैतिक सिद्धांतों की रूपरेखा तैयार करता है।

व्यापार : व्यापार क्षेत्र में AI संचालन को अनुकूलित करने, निर्णय लेने, दोहराए जाने वाले कार्यों को स्वचालित करने, ग्राहक सेवा में सुधार करने, व्यक्तिगत विपणन को सक्षम बनाने, अंतर्दृष्टि के लिए बिग डेटा का विश्लेषण करने तथा धोखाधड़ी और साइबर सुरक्षा खतरों का पता लगाने, आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन को कारगर बनाने, नवाचार एवं प्रतिस्पर्द्धा में मदद करता है।

शिक्षा : AI विभिन्न क्षेत्रों में लर्निंग या सीखने की क्षमताओं को पूरा करने हेतु नवीन और व्यक्तिगत दृष्टिकोणों के लिये नई संभावनाओं को तलाश सकता है। आईआईटी खड़गपुर ने नेशनल AI रिसोर्स प्लेटफॉर्म (NAIRP) विकसित करने के लिये अमेज़ॅन वेब सर्विसेज़ के साथ सहयोग स्थापित किया है। यह भविष्य में बेहतर टीचिंग और लर्निंग के लिये आँखों की गति, संकेत और अन्य मापदंडों की निगरानी जैसे तंत्रों का उपयोग करेगा। जैसा कि ChatGPT, Bard और अन्य बड़े भाषा मॉडल द्वारा प्रदर्शित किया गया है, जनरेटिव AI शिक्षकों की मदद कर सकता है और छात्रों को नवाचार में मदद कर सकता है।

न्यायपालिका : इसका उपयोग कानूनी अनुसंधान और विश्लेषण में सुधार, दस्तावेज़ीकरण व केस प्रबंधन को स्वचालित करने, न्यायिक प्रक्रियाओं और निर्धारित समय को बढ़ाने, ऑनलाइन विवाद समाधान की सुविधा प्रदान करने, पूर्वानुमानित विश्लेषण के माध्यम से कानूनी निर्णय लेने में सहायता करने और आभासी रूप से कानूनी सहायता प्रदान करके न्याय तक पहुँच प्रदान करने के लिये किया जा सकता है।



SUVAS (सुप्रीम कोर्ट विधिक अनुवाद सॉफ्टवेयर) : यह एक AI प्रणाली है, जो क्षेत्रीय भाषाओं में निर्णयों के अनुवाद में सहायता प्रदान कर सकती है। न्याय तक पहुँच सुनिश्चित करने की दिशा में यह एक और ऐतिहासिक प्रयास है। SUPACE (सुप्रीम कोर्ट पोर्टल फॉर असिस्टेंस इन कोर्ट एफिशिएंसी): हाल ही में इसे भारत के सर्वोच्च न्यायालय द्वारा लॉन्च किया गया था।

साइबर सुरक्षा/सुरक्षा : इसका उपयोग सुरक्षा और साइबर सुरक्षा में साइबर खतरों का पता लगाने और उन्हें रोकने, विषम गतिविधियों की पहचान करने, प्रारूप एवं कमज़ोरियों के लिये बड़ी मात्रा में डेटा का विश्लेषण करने, नेटवर्क तथा समापन बिंदु सुरक्षा को बढ़ाने, खतरे की प्रतिक्रिया एवं घटना प्रबंधन को स्वचालित करने, प्रमाणीकरण व अभिगम नियंत्रण को मज़बूत करने के लिये किया जाता है। यह साइबर हमलों के खिलाफ सक्रिय रूप से रक्षा हेतु रीयल-टाइम थ्रेट इंटेलिजेंस एंड प्रेडिक्टिव एनालिटिक्स प्रदान करता है।

AI के लाभ:

सटीकता : AI एल्गोरिदम सटीकता के साथ बड़ी मात्रा में डेटा का विश्लेषण कर सकता है, त्रुटियों को कम कर सकता है और विभिन्न अनुप्रयोगों जैसे- उपचार, पूर्वानुमान और निर्णय लेने के दौरान सटीकता में सुधार कर सकता है।

बेहतर निर्णय लेने की क्षमता : AI डेटा-संचालित अंतर्दृष्टि और विश्लेषण प्रदान करता है, निहित प्रारूप, प्रवृत्तियों और संभावित जोखिमों की पहचान करके निर्णय लेने में सहायता प्रदान करता है जो मनुष्यों द्वारा आसानी से पहचानी नहीं जा सकती हैं।

नवाचार में वृद्धि : AI नई खोजों को सक्षम कर स्वास्थ्य सेवा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी सहित विभिन्न क्षेत्रों में नवाचार को बढ़ावा देता है।

उत्पादकता में वृद्धि : AI उपकरण और प्रणालियाँ मानव क्षमताओं में वृद्धि कर सकती हैं, जिससे विभिन्न उद्योगों और क्षेत्रों में उत्पादकता एवं उत्पादन में वृद्धि हो सकती है।

निरंतर सीखने की क्षमता और अनुकूलता : AI प्रणाली नए डेटा और अनुभवों से सीख सकती है, लगातार अपनी क्षमता में सुधार कर सकती है, परिवर्तनों के साथ स्वयं को अनुकूलित कर सकती है, साथ ही बदलते रुझानों तथा प्रारूप के साथ अद्यतित रह सकती है।

अन्वेषण और अंतरिक्ष अनुसंधान : AI अंतरिक्ष अन्वेषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, स्वायत्त अंतरिक्ष यान, रोबोट अन्वेषण और दूरस्थ एवं खतरनाक वातावरण में डेटा विश्लेषण को सक्षम बनाता है।

AI के नुकसान:

नौकरी विस्थापन : AI स्वचालन से कुछ नौकरियों का विस्थापन हो सकता है क्योंकि मशीनें और एल्गोरिदम ऐसे कार्य कर सकते हैं जो पहले मनुष्यों द्वारा किये जाते थे। इसका परिणाम बेरोज़गारी हो सकती है।

नैतिक चिंताएँ : AI से नैतिक चिंताएँ प्रभावित होती हैं जैसे कि एल्गोरिदम में पूर्वाग्रह की संभावना और स्वायत्त निर्णय लेने वाली प्रणालियों के नैतिक निहितार्थ आदि।

डेटा उपलब्धता और गुणवत्ता पर निर्भरता : AI सिस्टम डेटा उपलब्धता और गुणवत्ता पर बहुत अधिक निर्भर करता है। पक्षपातपूर्ण या अपूर्ण डेटा गलत परिणाम दे सकता है या निर्णय लेने में मौजूदा पक्षपात को मज़बूती प्रदान कर सकता है।

सुरक्षा जोखिम : AI सिस्टम साइबर हमलों और शोषण के प्रति संवेदनशील हो सकते हैं। दुर्भावनापूर्ण AI एल्गोरिदम में हेर-फेर किया जा सकता है या सुरक्षा जोखिम पैदा करते हुए नापाक उद्देश्यों के लिये AI-संचालित उपकरणों का उपयोग किया जा सकता है।

अति-निर्भरता : उचित मानवीय निरीक्षण या आलोचनात्मक मूल्यांकन के बिना AI पर आँख बंद करके भरोसा करने से त्रुटियाँ या गलत निर्णय हो सकते हैं, खासकर अगर AI सिस्टम अपरिचित या अप्रत्याशित स्थितियों का सामना करता है।

पारदर्शिता की कमी : कुछ AI मॉडल, जैसे कि डीप लर्निंग न्यूरल नेटवर्क, की व्याख्या करना मुश्किल हो सकता है, जिससे उनके निर्णयों या पूर्वानुमानों के पीछे के तर्क को समझना चुनौतीपूर्ण हो जाता है (जिसे "ब्लैक बॉक्स" समस्या कहा जाता है।)

प्रारंभिक निवेश और रखरखाव लागत : AI सिस्टम का प्रबंधन करने के लिये अक्सर बुनियादी ढाँचे, डेटा संग्रह और मॉडल विकास में महत्वपूर्ण अग्रिम निवेश की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त AI सिस्टम को बनाए रखना और अपडेट करना महँगा हो सकता है।

निष्कर्ष : AI में मानव बुद्धि से परे जाने की पूरी क्षमता है और यह किसी भी विशेष कार्य को सटीक और कुशलता से कर सकता है। इसमें भी कोई संदेह नहीं है कि AI में अपार क्षमता है। हालाँकि किसी भी चीज़ पर अधिक निर्भरता अच्छी नहीं होती है और कुछ भी पूर्ण रूप से मानव मस्तिष्क के समान नहीं हो सकता है। इसलिये AI का अत्यधिक उपयोग नहीं किया जाना चाहिये क्योंकि बहुत अधिक स्वचालन और मशीनों पर निर्भरता, वर्तमान मानव जाति और आने वाली पीढ़ियों के लिये खतरनाक साबित हो सकती है।





सेवानिवृत्त व्यक्ति बनाम फ्यूज बल्ब



श्री अमित राज वर्मा

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

एक छोटे से शहर में एक आई.ए.एस. अफसर अपने परिवार सहित रहने के लिये आये, जो हाल ही में सेवानिवृत्त हुए थे। ये अफसर हैरान-परेशान से रोज शाम को अपने घर के नजदीक के एक पार्क में टहलते हुए, अन्य लोगों को तिरस्कार भरी नजरों से देखते थे और किसी से भी बात नहीं करते थे। एक दिन वे एक बुजुर्ग के पास गुफ्तगू के लिए बैठे और फिर प्रतिदिन उनके पास बैठने लगे। उनकी वार्ता का विषय एक ही होता था मैं इतना बड़ा आई.ए.एस. अफसर था। यहां तो मैं मजबूरी में आ गया हूं। मुझे तो दिल्ली में बसना चाहिए था। और बुजुर्ग शांतिपूर्वक उनकी बातें सुना करते थे।

सेवानिवृत्त अफसर की घमंड भरी बातों से परेशान होकर एक दिन बुजुर्ग ने उनसे पूछा कि आपने कभी फ्यूज बल्ब देखे हैं ? बल्ब के फ्यूज हो जाने के बाद क्या कोई देखता है कि बल्ब किस कम्पनी का बना हुआ था ? कितने दाम का था ? कितने वाट का था ? उससे कितनी रोशनी होती थी ? बुजुर्ग ने आगे फिर कहा कि, बल्ब के फ्यूज हो जाने के बाद इनमें से कोई भी बात बिल्कुल भी मायने नहीं रखती है लोग बल्ब को कबाड़ में डाल देते हैं मैं सही कह रहा हूँ कि नहीं ?

फिर जब उन रिटायर्ड आई.ए.एस. अधिकारी महोदय ने सहमति में सिर हिलाया तो बुजुर्ग फिर बोले रिटायरमेंट के बाद हम सबकी स्थिति भी फ्यूज बल्ब जैसी हो जाती है ? हम कहां काम करते थे ? कितने बड़े पद पर थे ? हमारा क्या रुतबा था ? यह सब अब कोई मायने नहीं रखता। बुजुर्ग ने बताया कि मैं सोसाइटी में कई वर्षों से रहता हूं पर आज तक किसी को यह नहीं बताया कि मैं दो बार सांसद व शिक्षा मंत्री रह चुका हूं। उन्होंने आगे कहा कि वो जो सामने वर्मा जी बैठे हैं वे रेलवे के महाप्रबंधक थे और वे जो सामने से आ रहे हैं साहब वो सेना में ब्रिगेडियर थे, और बैरवा जी इसरो में चीफ थे। लेकिन हममें से किसी भी व्यक्ति ने ये बात किसी को नहीं बताई क्योंकि मैं जानता हूं कि सारे फ्यूज बल्ब, फ्यूज होने के बाद एक जैसे ही हो जाते हैं। चाहे वह 0 वाट का हो या 50 वाट का या फिर 1000 वाट का हो। कोई रोशनी नहीं, तो कोई भी उपयोगिता नहीं सिर्फ कबाड़ होने के सिवाय।

उन्होंने आगे कहा कि लोग अपने 'पद को लेकर इतने वहम में रहते हैं कि रिटायरमेंट के बाद भी उनसे अपने बीते दिन भुलाये नहीं भूलते। वे अपने घर के आगे नेम प्लेट लगाते हैं रिटायर्ड आइ.ए.एस. / रिटायर्ड आई.पी.एस. / रिटायर्ड पी.सी.एस. / रिटायर्ड जज आदि बुजुर्ग ने कहा कि माना आप बड़े ऑफिसर थे काबिल भी थे पर अब यह बात मायने नहीं रखती है बल्कि मायने यह रखता है कि पद पर रहते समय आप इंसान कैसे थे ?

आपने समाज के लोगों को कितनी तवज्जो दी ? समाज को क्या दिया ? कितने काम आये ? या फिर सिर्फ घमंड में ही एंठे रहे। बुजुर्ग आगे बोले कि अगर पद पर रहते हुए कभी घमंड आये तो बस याद कर लेना कि एक दिन आपको भी फ्यूज होना है, बुजुर्ग की बातों को सुनकर सेवानिवृत्त अधिकारी सन्न रह गए और उनकी नजरे झुक गई।

यह उन के लिये एक आईना है जो पद और सत्ता में रहते हुए कभी अपनी कलम से किसी का हित नहीं करते और रिटायरमेंट के बाद ऐसे लोगों को समाज की बड़ी चिंता होने लगती है। अभी भी वक्त है। चिंतन करिये तथा समाज की मदद कीजिये। अपने पद रूपी बल्ब से समाज व देश को रोशन करिये, तभी रिटायरमेंट के बाद समाज आपको अच्छी नजरों से देखेगा और आपका सम्मान करेगा।

लेखा नियंत्रक : राष्ट्र निर्माण में निष्पक्षता का स्तंभ



सुश्री प्रीति सिंगारिया
लेखापरीक्षक

समीक्षा का सागर, लेकर ज्ञान की धार,
भ्रष्टाचार के खिलाफ, वह खड़ा है द्वार।
लेखा नियंत्रक का कार्य, सत्य की रक्षा करना,
देश की उन्नति में, यह बड़ा योगदान।

कार्य सतत विश्वास का, निष्कलंक समर्पण है,
सर्वोच्च न्याय की रक्षा, उनका प्रमाण है।
भ्रष्टाचार का अंत कर, लेखा समीक्षा से,
देश की संपत्ति की, वह रक्षा करते हैं वे।

जब भी उठती है कोई भ्रष्टाचार की आंधी,
तो उनकी नजर सदैव निष्कलंकता की ओर जाती।
लेखा नियंत्रक का कार्य, यही है उनका संकल्प,
देश को स्वच्छ और सुशासित, बनाने का विश्वास।
लेखा नियंत्रक की कल्पना, देश को निर्माण करती है मजबूत,
महालेखापरीक्षक का काम, देश के विकास में है योगदान बहुत।

ज्ञान की राह पर चलते, सच्चाई का पथ दिखाते हैं वे,
देश की समृद्धि के लिए, करते हैं निरंतर प्रयास वे।
लेखा समीक्षा के जादू में, भ्रष्टाचार का अंत होता है,
लेखा नियंत्रक और महालेखा परीक्षक, देश के लिए वरदान होता है।



बिछोह



श्री विशेष कुमार त्रिपाठी,
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

आज फिर निगाहें उनकी कह रही ऐसे,
तुमसे मिले हुए अरसे गुजर गए जैसे।
लबों पर अधूरे शब्द बयां कर रहे खामोशी,
जैसे इंतजार है उनको करने को गरमजोशी।

हाँ, आओ प्रिय प्रतीक्षा है तुम्हारी,
बढ़ाओ न कदापि ये बेकरारी।

पहले भी तरस चुके हैं,
अँखिया भी बरस चुकी हैं।

खुला है हृदय द्वार, स्वागत को तुम्हारे,
आओ संग बैठो, कुछ पल साथ हमारे,
बांटो कुछ खुशियाँ, कुछ वेदना के किस्से,
जो तुम न हो तो, बयां करूँ कुछ किससे?

मजबूर करते हो हर एक आहट पर,
द्वार की ओर झाँकने की आदत से।

समझ सको तो समझो बिरह वेदना मेरी,
सतत जल रही हूँ, बिरह याद मे तेरी।

नेह वृष्टि कर दो आकर, एक बार प्रिये,
चाहत मेरी पूरी कर दो एकबार प्रिये॥





भारत का डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना के क्षेत्र में बढ़ता प्रभुत्व



सुश्री अंकिता
लेखापरीक्षक

डिजिटल से जब भी किसी साम्राज्य की समृद्धि या संपन्नता का अनुमान लगाया जाता है, तो क्या आधार लिए जाते हैं? साम्राज्य की सीमाओं का विस्तार कहाँ तक था? सेना कितनी बड़ी थी? खजाने में धन कितना था? इसी सब में उस साम्राज्य का राजा कितना दूरदर्शी, प्रजा हितकारी और विवेकी था? इसका निर्णय किस आधार पर किया जाए? इसका अन्य सभी आधारों के अलावा मुख्य आधार सड़कें, विद्यालय, विश्वविद्यालय, धर्मशाला, नहरें, कुएं, बांध इत्यादि का निर्माण भी है, जो प्राचीन काल से ही सामाजिक जीवन में सार्वजनिक बुनियादी ढांचे के महत्व को दर्शाते हैं।

जैसे-जैसे समय बदला, अन्य सभी परिवर्तनों के साथ सार्वजनिक बुनियादी ढांचे/ सार्वजनिक अवसंरचना (Public Infrastructure) की परिभाषा में भी परिवर्तन आता गया। सार्वजनिक अवसंरचना की श्रेणी में इन सभी के अलावा रेल, डाक, विद्युत इनफ्रास्ट्रक्चर जैसे अनेक बिन्दु जुड़ते गए। इसी सार्वजनिक अवसंरचना का एक आधुनिक अपरिहार्य हिस्सा डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना (Digital Public Infrastructure) हैं? अब नया प्रश्न है कि ये डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना है क्या ?

साधारण शब्दों में बताया जाए तो डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना (डी.पी.आई., डिजिटल पब्लिक इनफ्रास्ट्रक्चर) उन डिजिटल सेवाओं और माध्यमों को दर्शाता है जो अनेक सार्वजनिक सेवाओं जैसे स्वास्थ्य, पहचान, भुगतान, शिक्षा तथा अन्य अनेक सेवाओं की पहुँच सामान्य नागरिक तक आसान व प्रभावी तरीके से सुनिश्चित करवाता है। डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना प्रवाह को भी दर्शाता है। उदाहरण के लिए यू.पी.आई. (UPI) के माध्यम से भुगतान का सुगम प्रवाह होता है व आधार से नागरिकों की सुचना का सुगम प्रवाह होता है।

भारत ने तीन मूलभूत डिजिटल पब्लिक इनफ्रास्ट्रक्चर का निर्माण कर लिया है: त्वरित भुगतान (UPI), पहचान (आधार) और डाटा एम्पावरमेंट प्रोटेक्शन आर्किटेक्चर (DEPA)। इन तीनों को सम्मिलित रूप से इंडिया स्टैक की संज्ञा दी गयी है। भारत इस प्रकार के डिजिटल ढांचे के तीन आधारों को खड़ा करने वाला विश्व का प्रथम देश बन गया है। इंडिया स्टैक की खासियत है कि इसे अन्य देशों में भी उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप लागू किया जा सकता है। यह विश्व के समस्त नागरिकों के सशक्तिकरण की तरफ एक अहम कदम हो सकता है। इसके साथ ही यह भारत के वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणा को भी आगे बढ़ाने में मदद करेगा। इंडिया स्टैक भारत को डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका में रखने के साथ-साथ विश्व के अन्य देशों को भी सहयोग देकर भारत की विश्व स्तर पर एक सहयोगी व तकनीकी स्तर पर विकसित देश की छवि बनाने में सहयोग करेगा।

डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना(DPI) के पहलू:

1. पहचान :- भारत के प्रत्येक नागरिक की डिजिटल पहचान की सुनिश्चितता आधार के माध्यम से की गयी है। आधार के माध्यम से सेवाओं की जनसामान्य तक पहुँच, सामाजिक और वित्तीय समावेशन, राजकोषीय बजट का प्रबंधन और जन-केन्द्रित शासन आदि सुनिश्चित किए गए हैं। सितम्बर 2023 तक भारत के नागरिकों के

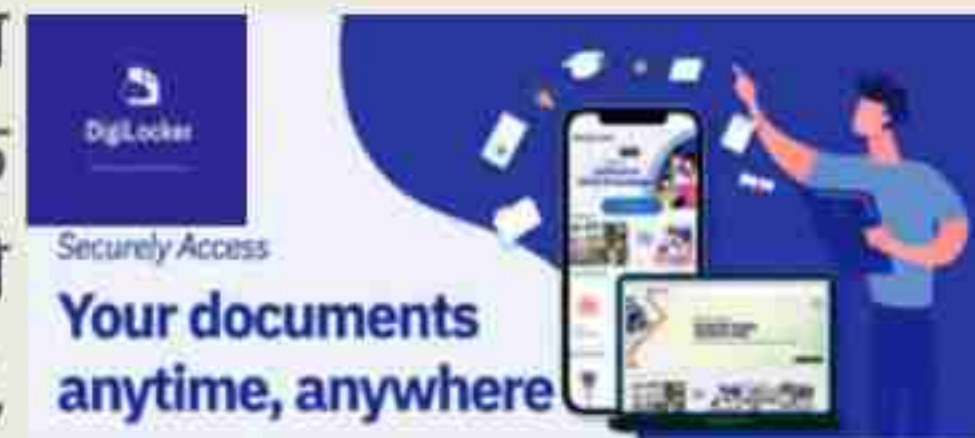
लिए 138 करोड़ आधार नंबर तैयार किए जा चुके हैं। आधार का उपयोग सरकारी कार्यों के साथ साथ निजी या प्राइवेट कार्यों के लिए भी किया जाता है जो आधार को पहचान का एक सरल व अत्यंत उपयोगी माध्यम बनाते हैं।



2. भुगतान :- भुगतान के लिए भारत में रियल टाइम त्वरित भुगतान प्रणाली यूपीआई (यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफ़ेस) का निर्माण किया है। यूपीआई बैंक खाते को मोबाइल एप्लिकेशन से जोड़ती है जिसके माध्यम से बैंकिंग सेवाएँ एक ही जगह पर आसानी से उपलब्ध हो जाती है। यूपीआई के माध्यम से भुगतान ने वित्तीय वर्ष २०२३-२४ में १०० बिलियन (कुल १३१ बिलियन ट्रांजैक्शन) को पार कर लिया है जो भारतीय समाज में ऑनलाइन भुगतान की बढ़ती व्यापकता व कैशलेस अर्थव्यवस्था के तरफ बढ़ते कदमों का प्रतीक है।

3. चिकित्सा :- चिकित्सा के क्षेत्र में डिजिटल पब्लिक इनफ्रास्ट्रक्चर (डीपीआई) के माध्यम से सेवाओं की पहुँच को आसान व प्रभावी बनाया गया है। कोविन पोर्टल ने भारत के कोविड टीकाकरण अभियान को सभी लोगों तक पहुंचाने में अभूतपूर्व योगदान दिया है। देश में चिकित्सा क्षेत्र में डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत बनाने के लिए राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन (NDHM) को संचालित किया जा रहा है जिसके अंतर्गत सभी नागरिकों के लिए विशिष्ट स्वास्थ्य आईडी तैयार की जा रही है व सभी स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं की डिजिटल रजिस्ट्री बनाई जा रही है। चिकित्सा क्षेत्र में डीपीआई (DPI) के अन्य रूप जैसे ई-संजीवनी व आरोग्य-सेतु आदि भी विद्यमान हैं। यह सब मिलकर सार्वभौमिक स्वास्थ्य पहुँच को सुनिश्चित करने में सहयोग कर रहे हैं।

4. डिजिलॉकर :- डिजिलॉकर भी भारत की डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना का एक हिस्सा है। इसका उद्देश्य भौतिक दस्तावेजों के उपयोग को कम करके ई-दस्तावेजों के आदान-प्रदान को बढ़ावा देना है। इसमें ई-हस्ताक्षर किए जा सकते हैं और जरूरत पड़ने पर उनको साझा भी किया जा सकता है। इसमें विद्यालय प्रमाण पत्र, विवाह प्रमाण पत्र, पासपोर्ट, बीमा, ड्राइविंग लाइसेंस आदि दस्तावेजों का डिजिटल प्रारूप रखा जा सकता है।



5. फास्टटैग एवं डिजियात्रा :- फास्टटैग एक राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक टोल संग्रह प्रणाली है, जिसमें RFID तकनीक के माध्यम से सीधे खाते से रूपये काटे जा सकते हैं। फास्टटैग ने परिवहन को सुगम बनाया है व लंबे समय तक टोल पर फसें रहने से होने वाली समय की बर्बादी व ऊर्जा हानि से भी बचाया है। डिजियात्रा एक चेहरा पहचान प्रणाली पर आधारित है जिसने हवाई यात्रा की प्रक्रिया को आसान व तेज बनाया है। इसमें दस्तावेज की जगह हर बिन्दु पर चेहरा स्कैन कराना होगा। यह एक पेपरलेस चेक-इन व्यवस्था है।

इन सभी उपलब्धियों के बावजूद डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना की राह में कुछ चुनौतियां भी हैं जिनसे पार पाना अत्यंत आवश्यक है। चुनौतियों की श्रृंखला में प्रथम चुनौती है; **डिजिटल विभेद** - इंटरनेट की पहुँच हर जगह एक समान नहीं है। विशेषतया ग्रामीण इलाकों में या तो इंटरनेट नेटवर्क उपलब्ध ही नहीं है और अगर है भी तो इसकी कनेक्टिविटी शहरी इलाकों की तुलना में अपेक्षाकृत कम है। इसके अतिरिक्त लोगों के डिजिटल ज्ञान में भी बहुत बड़ा अंतर है जो इस विभेद को और अधिक बढ़ाते हैं। ग्रामीण क्षेत्र व दूर दराज के क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे की पहुँच की कमी या अनुपस्थिति है। बिजली की पहुँच की कमी, मोबाइल व कम्प्यूटर आदि की सीमित पहुँच भी डिजिटल विभेद को बढ़ा रही है। डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना के कुछ विशेष भाषाओं तक सीमित होने के कारण इसका फायदा अन्य भाषाओं को उपयोग में लाने वाले लोग उतने अच्छे तरीके से नहीं कर पाते हैं।

डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना की कुछ अन्य चुनौतियाँ डाटा प्राइवसी व साइबर सुरक्षा के रूप में भी

सामने आती हैं। डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना का ढांचा उपयोगकर्ता द्वारा प्रदान की गयी निजी जानकारी पर आधारित है। इस जानकारी के डाटा लीक या उस डाटा के अनुचित इस्तेमाल की आशंका बनी रहती है। इसके अतिरिक्त साइबर अटैक की स्थिति में इस सम्पूर्ण ढांचे पर खतरा आ सकता है।

इन सभी चुनौतियों के बावजूद डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना नागरिकों तक सेवाओं की सुगम पहुँच तथा सरकार द्वारा नितियों के आवश्यकता अनुरूप निर्माण को सुनिश्चित करता है।



इसका एक उदाहरण प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (**Direct Benefit Transfer, DBT**) है जिसमें सरकारी नीतियों से मिलने वाली सहायता राशि को सीधे लाभार्थियों के आधार-लिंकड खाते में भेज दिया जाता है। यह भ्रष्टाचार को कम करने में भी सहायता प्रदान करता है।

भारत स्वयं अपने डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना को मजबूत बनाने के साथ-साथ अन्य देशों की भी सहायता कर रहा है। भारत की G-20 शिखर सम्मेलन अध्यक्षता के दौरान डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना (डी.पी.आई.) की परिभाषा और रूपरेखा को मान्यता मिली जिससे भारत ने डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना के क्षेत्र में एक अभूतपूर्व उपलब्धि हासिल की है। इसके अतिरिक्त भारत के नेतृत्व वाली दो पहलों - ग्लोबल डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर रिपोजिटरी और सोशल इम्पैक्ट फंड - की शुरुआत की घोषणा की गयी जिनका निर्माण ग्लोबल साउथ में डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर को आगे बढ़ाने हेतु सोशल इम्पैक्ट फंड के विकास के उद्देश्य से किया जाएगा। इनसे डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना के डोमेन में सभी के लिए एक पारदर्शी, जवाबदेह और निष्पक्ष डिजिटल इकोसिस्टम बनाने में मदद मिलेगी।

अभी डी.पी.आई. के सामने आने वाली चुनौतियों को दूर करने के लिए अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। इनमें से कुछ पीएम सूर्य घर, पीएम वानी, भाषिणी, राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा नीति, भारत नेट, 5G और 6G सेवाओं की भारत में शुरुआत आदि हैं। डी.पी.आई. को मजबूत व प्रभावी बनाने के लिए यू.पी.आई. (UPI) व आधार जैसे अनेक नए नवाचारों पर बल दिया जा रहा है। आज जब विश्व के महत्वपूर्ण मंचों पर हम गर्व से बताते हैं, कि कैसे भारत में एक छोटे से छोटा दुकानदार भी अपनी दुकान पर एक QR कोड रखता है और ग्राहक उसे स्कैन करके भुगतान करता है और वो भुगतान सीधा दुकानदार के आधार कार्ड लिंकड खाते में पहुँच जाता है। इससे हमें डिजिटल के क्षेत्र में और अधिक प्रगति करने की प्रेरणा मिलती है और यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि यह तो बस डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना की कहानी की शुरुआत मात्र है, कहानी तो आगे अभी बहुत लंबी है।



संवाद, आभासी दुनिया से, एक लघु कथा



श्रीमती रीना त्रिपाठी
पत्नी श्री विशेष कुमार त्रिपाठी
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

24...नहीं...

26...नहीं...

28...

अच्छा सभी लोग कंबल ले लो,

क्यू?

ऐसे ही!

शयन कक्ष में ऐसे ही हो हल्ला हो रहा था ए.सी. को चलाने को लेकर।

तुम तो बस कुछ बोलना ही मत, तुम्हें तो अपनी नींद से ही मतलब, कोई सोए या जागे, तुमको परवाह ही क्या है? गुस्से में तमतमाई हुई सरला अपने पतिदेव को सुना रही थी। पतिदेव आभासी दुनिया की सुंदरियों के रील देख देख मुस्कुरा रहे थे, बीच बीच में स्क्रीन पर कुछ काम धंधे की चीजे देख कर यह बताना चाह रहे थे कि वह बहुत व्यस्त है।

मध्यमवर्गीय परिवार के घर किसी तरह बमुश्किल एक ही ए.सी. लग जाए तो मानो बहुत बड़ी उपलब्धि पाली हो। कमरे में लगा एक डबल बेड और इंतजाम की गई दो फोल्डिंग चारपाईयां, ए.सी. के ठीक सामने बड़ा बेटा, फिर सरला, उसके बाद छोटा बेटा और दीवाल के सहारे तकिया लगाए रामानंद। सरला चाह के भी पति तक नहीं पहुंच सकती थी, कारण था एस.पी.जी. कमांडो की भांति दोनों बेटों से घिरी जो थी।

रामानंद यूं तो एक सफल, गंभीर तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति था लेकिन वो कहते हैं ना कि वो बदमाशियां, बचपना, और वो मर्दाना स्वभाव यदि नर जीवन में असमय अनुपस्थित हो जाए तो एक स्त्री चाह कर भी उन पलों को जी नहीं सकती है। सरला यूं तो एक शिक्षित, बहुआयामी, तथा आधुनिक विचारों की स्त्री थी किंतु उम्र के चार दशकों को पार करने के बाद भी उन्मुक्त जीवन जीने की चाह रखती थी। समृद्ध गृहस्थी की मालकिन, कमाऊ पति का होना, दो बेटों से भरा आंगन इन सब के लिए वो हमेशा ईश्वर का धन्यवाद करती थी।

बच्चे ए.सी. की शीतल हवा में सो चुके थे, रामानंद भी आभासी दुनिया से ऊबकर अपना मोबाइल तकिए के नीचे रख कर चैन की नींद सो रहा था। कमरे में कोई जाग रहा था तो...सरला! ना जाने उसके मन में क्या चल रहा था, एक हाथ से कभी अपने छोटे बेटे को दुलारती दूसरे हाथ से मोबाइल में कुछ देखकर फिर रख देती। लंबी लंबी सांसें लेती बेटे के सर से हाथ को बढ़ाकर रामानंद को जगाना चाह रही थी किंतु अपनी व्यस्त दिनचर्या से थका-हारा पुरुष अपनी नींद से जल्दी कोई समझौता करता नहीं है।

सरला के मोबाइल पर अचानक बत्ती सी जली, मोबाइल हाथ में लेकर उसने मैसेंजर चेक किया, कोई संदेश आया था। उन संदेशों को पढ़ते ही उसके चेहरे के भाव बदल गए थे, अब वो मुस्कुरा रही थी।



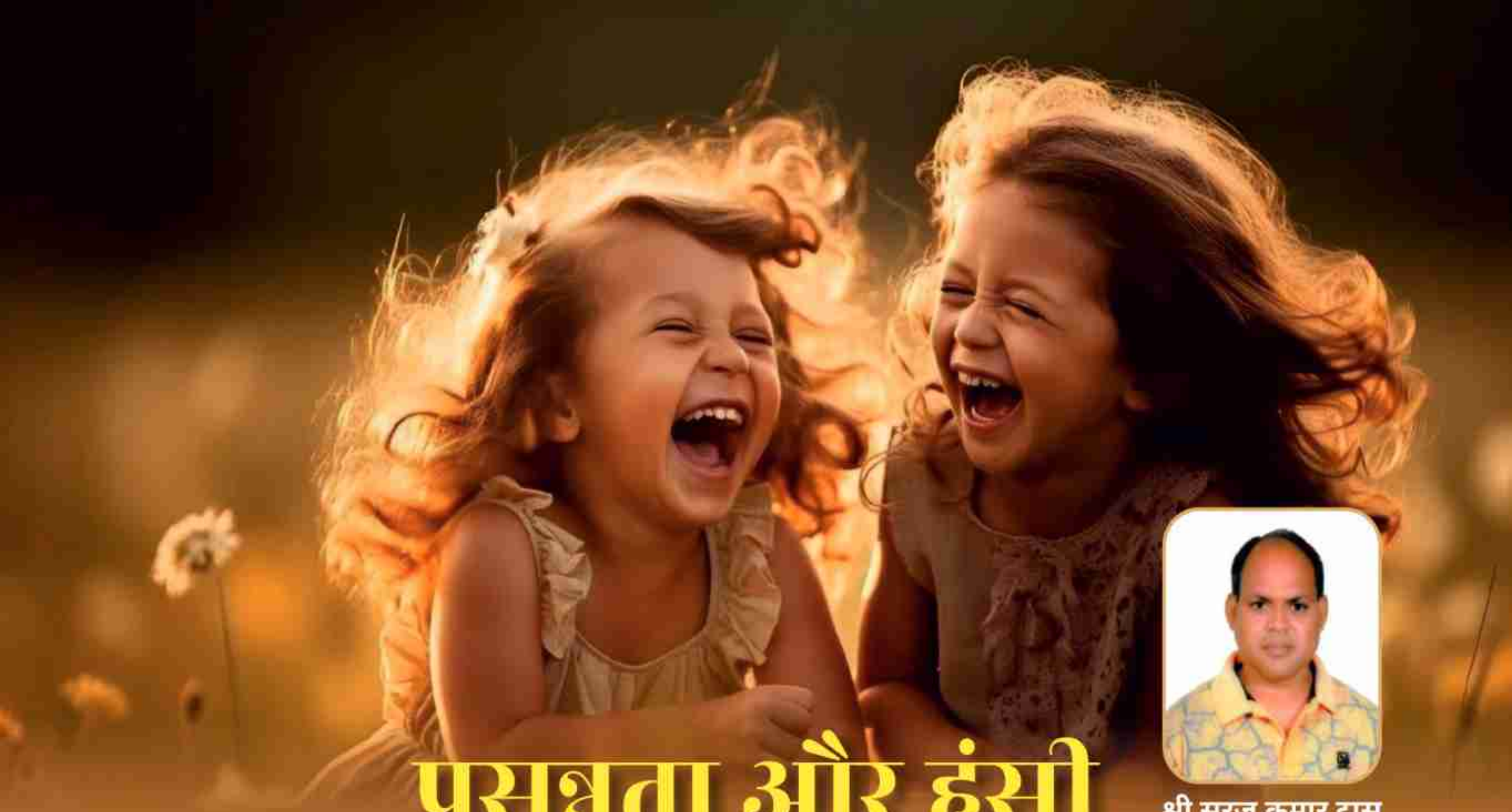
फिर एक संदेश, अब सरला लपक कर बिस्तर से उठी और कमरे का दरवाजा धीरे से बंद करते हुए बाहर हाल में सोफे पर जा बैठी। संदेश लगातार आ रहे थे, हाल के सन्नाटे में दीवाल पर टंगी घड़ी की टिक टिक और सरला की सांसों की आवाज के सिवा कुछ और नहीं सुना जा सकता था। अब सरला ने भी जवाब टाइप करना शुरू किया। इत्तफाक देखिए, अभी कुछ ही देर पहले सरला के जिस अधूरी इच्छाओं का सम्मान कतिपय कारणों से न हो सका था, अब हुबहु वही बातें सरला और उस संदेश भेजने वाले के मध्य मैसेंजर पर हो रही थी। संदेशों के आदान प्रदान की गति अब तीव्र होती जा रही थी, एक एक शब्द को वो पढ़ती, मुस्कुराती फिर उंगलियों को और तेज लिखने का आदेश सा देती। पता नहीं उन संदेशों में ऐसा क्या था कि सरला अपने आप को उन्मुक्त रखकर निर्बाध रूप से इसका जवाब लिखे जा रही थी। वो कहते हैं ना कि यदि स्त्री मन से प्रफुल्लित हुई तो वह अपना सर्वस्व साझा कर सकती है। ठीक ऐसे ही सरला उन पलों को जी लेना चाहती थी।

मोबाइल पर बातचीत का यह सिलसिला काफी देर चला, इस बीच यदि बच्चों के कमरे से कोई आवाज आती या आहट सुनी तो सतर्क सा हो जाती। सरला और संदेश भेजने वाले के मध्य संवाद का यह स्तर जहां तक पहुंच चुका था उसको लेकर अब वो थोड़ा भयभीत हुई, भयभीत तो नहीं लेकिन अधीर जरूर हुई। अपने आप से प्रश्न करते हुए, सरला...!! क्या तुम यह सही कर रही हो, किसी के साथ अन्याय तो नहीं?? नहीं: क्या किया ही है मैंने?? दिल को छूने वाले अनजान शक्स से बातें ही तो की हैं। अब वो उलझ चुकी थी, सोफे के कोने में बैठी इसी उधेड़ बुन में लगी हुई। उधर संदेश लगातार आ रहे थे...

सरला ने टाइप किया कुछ, मिटाया, फिर टाइप किया, मिटाया। अब उसको कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। व्याकुल परेशान होकर किचन की तरफ बढ़ी, फ्रिज से बोतल निकाल कर अपने गले को तर करते हुए वापस सोफे पर आ बैठी। मैसेंजर पर उसने लिखा, रात बहुत हो चुकी अब सोते हैं नहीं तो लेट हुई तो सुबह डांट भी मिलेगी और जस्टिफिकेशन भी देना होगा। उसको यह अहसास तो था की संदेश भेजने वाले व्यक्ति की स्थिति इस वक्त कैसे होगी, यही तो आभासी संवाद का असीम आनंद है।

मोबाइल की बैटरी भी उतनी ही बची थी, जितनी सरला के अंदर संदेशों के उत्तर देने के लिए हिम्मत। मोबाइल स्विच ऑफ करके चार्ज में लगा कर उसने धीरे से कमरे में प्रवेश किया, नीरव सन्नाटे में कुछ खरटे की आवाज!! सरला भी चुपचाप छोटे बेटे के पास जाकर लेट गई। आंखों को बंद करके सोने का प्रयास किया लेकिन अब जो प्रश्न उसके अंतर्मन में चल रहे थे, वो समंदर की लहरों की तरह हिलोरे मारने लगे। कभी बेटे को देखती, कभी रामानंद की तरफ। सरला ने अपने आप से कुछ अनसुलझे सवाल किए, उत्तर की प्रतीक्षा में कब उसकी आंखें लग गई, पता ही न चला।





प्रसन्नता और हंसी



श्री सुरज कुमार दास
वरिष्ठ अनुवादक

प्रसन्नता का प्रदर्शन ही हंसी है, जहां हंसी है वहाँ प्रसन्नता और सुख की उपस्थिति है। साथ ही यह बात भी है कि प्रसन्नता और सुख भी वहीं होते हैं जहां हंसी विद्यमान होती है अर्थात् जो मनुष्य हंसा-खिला रहता है, वही स्वस्थ प्रसन्न और सुखी जीवन बिता सकता है।

हंसना आन्तरिक प्रसन्नता को प्रकट करता है। प्रसन्नता के इस प्रकटीकरण अर्थात् हंसी से समस्त शरीर की धमनियां या रक्त-वाहिनियां हरकत में आती हैं और उन सबका व्यायाम हो जाता है। रक्त का प्रवाह तेज़ हो जाता है। समस्त संस्थान में ताज़गी आती है। आंखों में चमक, त्वचा में पसीना और फेफड़ों के प्रत्येक कोष्ठ में ताज़ी हवा पहुंचती है तथा गंदी हवा बाहर चली जाती है।

हंसने से शरीर की सभी क्रियाएं ठीक चलती हैं। शरीर का अंग-प्रत्यंग सही ढंग से काम करता है। जब शरीर का प्रत्येक अंग सही चलता है, तो स्वास्थ्य ठीक रहता है। इसका सीधा अर्थ यही है कि हंसने से स्वास्थ्य ठीक रहता है। शरीर का संतुलन यानी कि बैलेंस बना रहता है। सब कुछ सुचारू रूप से चलता रहता है।

प्रसन्नता या खुशी भगवान की दी हुई नियामत है। यह मनुष्य को ईश्वर ने बिना मूल्य के दी है। इसे प्राप्त करने वाला निःशुल्क प्राप्त कर सकता है वैसे न पाने वाला लखपति भी हो तो प्राप्त नहीं कर पाता।

कोई भी दवा स्वास्थ्य के लिए इतना लाभ नहीं करती- यदि आपको किसी डाक्टर के पास जाना है तो ऐसे डाक्टर को चुनो जो हंसमुख हो और खुश दिल हो। ऐसे डाक्टर अपनी खुशमिजाजी द्वारा दवा से भी अधिक लाभ पहुंचाते हैं। खुशमिजाज डाक्टर अपने खिले हुए चेहरे से जब हंसी बांटता है तो कितना अच्छा लगता है। रोगी का आधा रोग तो बातों से ही जाता रहेगा। दूसरा ऐसे डाक्टर हो जो मरीज़ से सीधी तरह बात न कर सके, झिड़कता हो। क्रोध में या अकड़ में होता तो अथवा चिंतित रहता हो...तो मरीज़ को वह क्या ठीक कर पायेगा ऐसा डाक्टर तो चिंता बांटता है। रोगी को तो ऐसे डाक्टर की आवश्यकता है जो हंसी बांटता हो। जो स्वयं प्रसन्न हो और रोगियों को भी प्रसन्नता बांटे।

आधे से अधिक रोग शारीरिक न होकर मानसिक होते हैं। मानसिक रोगों की सर्वोत्तम दवा तो रोगी से प्रसन्नचित्त होकर हंसकर बातें करना ही है, बहुत से तो पागल भी इस औषधि से ठीक हो जाते हैं। एक अत्यंत कमजोर व्यक्ति भी यदि प्रसन्नचित्त रहने लगे तो वह शक्ति प्राप्त कर सकता है। रोगी जिस दिन से हंसा-खिला

और प्रसन्न रहने लगेगा, उसी दिन से ठीक होने लगेगा। क्योंकि मन प्रसन्न रहने से शरीर का श्वास संस्थान, पाचन संस्थान, रक्त संस्थान सहित समस्त शरीर और मस्तिष्क सुचारू रूप से कार्य करने लगता है। जी भरकर हंसना मानसिक और शारीरिक दोनों ही प्रकार से स्वस्थ होने का अनोखा उपाय है। जो व्यक्ति चिड़चिड़ा, अप्रसन्न और चिन्तित रहता है वह जीवन शक्तियों को भी खो बैठता है। वह अपने जीवन के लक्ष्यों और आदर्शों तक को खो बैठता है। वह झगड़ालू, घमण्डी और स्वार्थी हो जाता है। इस प्रकार की सभी बुराइयों से जीवन बचना आवश्यक है। यह तभी हो सकता है, जब मनुष्य प्रसन्न रहे और सदा हंसता-हंसता रहे।

महान लेखक शेक्सपियर ने कहा है कि **'प्रसन्नचित लोग चिरकाल तक जीवित रहते हैं।'** लेखक का यह कथन सत्य है। वास्तव में प्रत्येक दृष्टि से वे ही लोग चिरकाल तक जीवित रहते हैं, जो प्रसन्न रहते हैं। शरीर से भी, मन से भी और यश नाम से भी वे चिरकाल तक रहते हैं। प्रसन्नचित, हंसने, मुस्कराने वाले व्यक्ति के मन के भाव चेहरे पर अंकित होते हैं। उसके चेहरे पर एक आकर्षण रहता है। उसकी बातों से लोग प्रभावित होते हैं और सबको अच्छा लगता है।

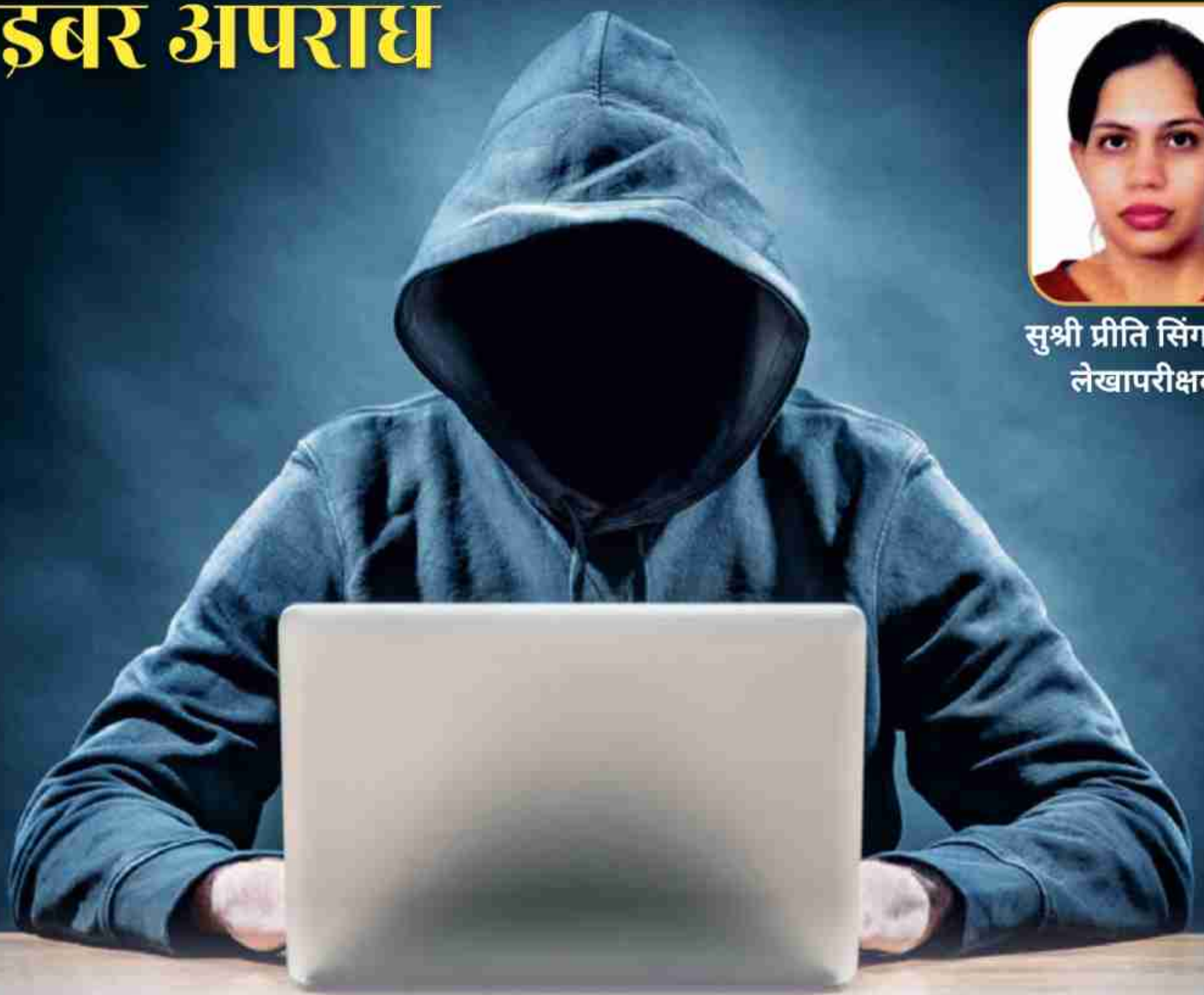
किसी अखबार में एक बार छपा था कि कोई स्त्री बीमार और बहुत दुःखी रहती थी। उसका ईलाज भी नहीं हो पा रहा था। तब उसने निश्चय किया कि अब वह प्रसन्न रहेगी। जब तक जिएगी प्रतिदिन तीन बार हसेंगी चाहे कोई कारण हसने का हो या ना हो। नियमानुसार वह हंसने-मुस्कराने लगी। जब कोई कारण न होता तो अपने निजी कक्षा में वह अकेली ही हँसती। फलतः आश्चर्यजनक परिणाम यह हुआ कि वह बहुत जल्दी स्वस्थ हो गई। बीमारी जाती रही और उसका घर भी प्रसन्नता और आनंद से भर उठा। चमत्कार हंसी ने दिखाया था। सचमुच हंसी में जीवनी शक्ति है।

उस स्त्री की हंसी ने केवल उसी को लाभान्वित नहीं किया बल्कि दूसरों को भी लाभ पहुंचाया। उसका पति भी हसने लगा। बच्चों पर भी अच्छा प्रभाव पड़ा। उसके संपर्क में आने वाले भी उससे हंस कर बातें करने लगे। जब कोई उससे पूछता कि आज वह कितनी बार हंसी, तो यह स्वाभाविक है की पूछने वाला और उस स्त्री, दोनों को ही हंसी आती होगी। इस प्रकार गुणात्मक रूप से वह हंसी बिखरती चली जाती थी।





सुश्री प्रीति सिंगारिया
लेखापरीक्षक



डिजिटल दुनिया ऐसी परिस्थितियों का निर्माण करती है, जहाँ कुछ भी गोपनीय या रहस्य नहीं रह जाता।'

कितनी सत्य है उपर्युक्त पंक्तियाँ? वर्तमान विश्व क्या सच में ऐसी स्थिति में पहुँच गया है जहाँ कुछ भी छुपा हुआ नहीं है? अगर गौर से देखा जाए तो हाँ, बहुत हद तक आज यह स्थिति आ गयी है। इंटरनेट ने समूचे विश्व की सीमाओं को लांघकर ज्ञान, सूचना और संपर्क संबंधी क्रांति को सभी व्यक्तियों तक उपलब्ध कराया है। गौरतलब है कि ज्ञान और अभिव्यक्ति के विस्तार से सुविधाओं में भी विस्तार हुआ है लेकिन विकृत मानसिकताओं के चलते इस व्यवस्था के दुरुपयोग संबंधी मामले आए दिन सामने आ रहे हैं। वर्तमान में, प्रायः अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सभी सम्मेलनों में साइबर क्राइम चर्चा का विषय बन चुका है।

आज के समय में इंटरनेट समय-बचत का सबसे बड़ा माध्यम बन गया है क्योंकि किसी भी कार्य को करने हेतु लगने वाला खर्च आधे से भी कम रह गया है। इंटरनेट ने हमारी जिंदगी को अनुशासन, सलीका और सुनिश्चितता प्रदान किया है, लेकिन इसके साथ-साथ इंटरनेट पर आज अपराध का एक समृद्ध संसार फल-फूल रहा है। इस आपराधिक संसार के ट्रोलिंग, सूचना एवं पहचान की चोरी, यौन अपराध, पोर्नोग्राफी, वायरस अटैक आदि मुख्य अवयव हैं।

साइबर अपराधों को दो तरह से वर्गीकृत किया जा सकता है :-

1. एक लक्ष्य के रूप में कंप्यूटर (अन्य कंप्यूटरों पर आक्रमण करने के लिये एक कंप्यूटर का उपयोग) जैसे कि हैकिंग, वायरस आक्रमण, DOS आक्रमण आदि।

2. एक शस्त्र के रूप में कंप्यूटर अर्थात्, साइबर आतंकवाद, बौद्धिक संपदा अधिकारों के उल्लंघन, क्रेडिट कार्ड धोखाधड़ी, अश्लीलता का प्रसार इत्यादि।

साइबर क्राइम एक ऐसा गैर-कानूनी कार्य होता है जिसमें सूचना तकनीक या कंप्यूटर का उपयोग किया जाता है। सूचना तकनीकी में हुई प्रगति ने आपराधिक गतिविधियों के क्षेत्र में नई संभावनाओं का मार्ग भी खोला है। इस प्रकार के अपराधों से निपटने हेतु साइबर कानून भी बनाए गए हैं।

साइबर क्राइम के तहत आने वाले विभिन्न कार्य :-

अनधिकृत पहुँच और हैकिंग :- किसी भी कंप्यूटर या कंप्यूटर नेटवर्क में बिना अनुमति प्रवेश करने को अनधिकृत पहुँच बनाना या हैकिंग कहते हैं। इस प्रकार के कार्य आमतौर पर वित्तीय अपराधों के संदर्भ में देखे जाते हैं। कुछ उदाहरण निम्न हैं।

- किसी बैंक के खाताधारकों के अकाउंट से दूसरे अकाउंट में पैसे स्थानांतरित करना।
- किसी व्यक्ति के क्रेडिट कार्ड की जानकारी चुरा कर उसका दुरुपयोग करना।
- किसी वेबसाइट के घटक को अनधिकृत तरीके से परिवर्तित करना।

भारत के संदर्भ में हैकिंग संबंधित कार्यविधियों को गैरकानूनी दर्जा प्राप्त है एवं इनफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी एक्ट, 2008 के तहत सजा का प्रावधान है।

• **डाटाचोरी :-** किसी संस्था या व्यक्ति या कंप्यूटर नेटवर्क में अनधिकृत व्यक्ति द्वारा बिना अनुमति लिये उसके कंप्यूटर के डाटा की कॉपी करना या उसे साझा करना डाटा चोरी अपराध के तहत माना जाता है।

• **कम्प्यूटर वायरस का प्रसार :-** किसी प्रोग्राम को किसी कंप्यूटर या कंप्यूटर नेटवर्क की अनुमति के बिना कंप्यूटर में प्रवेश कराना, कंप्यूटर वायरस को फैलाने की श्रेणी में आता है। आमतौर पर वायरस प्रोग्राम का कार्य किसी अन्य के कंप्यूटर डाटा को खराब करना होता है। जैसे कि किसी विमान सेवा के कंप्यूटर में वायरस के प्रवेश द्वारा डाटा के बदलने से प्लेन के दुर्घटनाग्रस्त होने की संभावना बन सकती है।

• **पहचान की चोरी :-** किसी अन्य व्यक्ति की पहचान चुराकर कंप्यूटर नेटवर्क पर कार्य करना इस अपराध की श्रेणी में आता है या फिर कंप्यूटर नेटवर्क पर स्वयं की पहचान छुपाते हुए स्वयं को दूसरे के नाम से उजागर करते हुए उस व्यक्ति के नाम पर धोखाधड़ी या घपला करना।

• **ट्रोजनहमला :-** ट्रोजन प्रोग्राम वैसे प्रोग्राम होते हैं जो देखने में उपयोगी लगते हैं लेकिन उनके द्वारा कंप्यूटर या कंप्यूटर नेटवर्क को नुकसान पहुँचाया जाता है।

इस प्रकार साइबर अपराध के अंतर्गत ऐसे गैर-कानूनी कार्यों को सम्मिलित किया जाता है, जिनसे कंप्यूटर प्रणाली को हथियार के रूप में इस्तेमाल करके अन्य कंप्यूटरों को निशाना बनाया जाता है। वर्तमान में साइबर अपराध के जरिए सोशल नेटवर्किंग के माध्यम से किसी व्यक्ति की निजता में अनधिकृत प्रवेश के अतिरिक्त उसकी गोपनीय सूचनाओं की जानकारी को साझा करके उससे धन की उगाही की जाती है।

साइबर युद्ध के माध्यम से एक देश दूसरे देश के कंप्यूटर नेटवर्क को नष्ट कर देता है अथवा सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण जानकारियों को हासिल करके राष्ट्र की संप्रभुता को चुनौती देता है। अमेरिका तथा इजरायल ने जहां वर्ष 2009 में ईरान के परमाणु कार्यक्रम के खिलाफ साइबर तकनीक का इस्तेमाल किया था तो वहीं 2016 में संपन्न हुए अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में रूसी सरकार द्वारा हैकिंग की बात सामने आयी थी। हैकिंग का वह बहुचर्चित मामला संपूर्ण विश्व के लिये एक चेतावनी का विषय बन कर उभरा था। वैसे इस समस्या पर अंकुश लगा पाना किसी एक देश के बस की बात नहीं है। यह एक वैश्विक समस्या है और इसका समाधान भी वैश्विक स्तर पर ही तलाशा जा सकता है।

विचारणीय बिंदु यह है कि भारत अपनी विविधता के कारण इस तरह के हमलों के लिए एक मुफीद जगह बन कर उभरा है। भारत में साइबर सुरक्षा तंत्र का विकास अभी अपनी प्रारंभिक अवस्था में है। ऐसे समय में जहाँ हमारा देश '**डिजिटलीकरण**' की ओर तेजी से बढ़ रहा है, साइबर सुरक्षा का खतरा भी बढ़ता जा रहा है।

भारत में इंटरनेट पर निज़ता के हनन की समस्या भी गंभीर होती जा रही है। '**रैनसमवेयर**' जैसे कंप्यूटर वायरस का भारत सहित दुनिया के देशों पर हुए हमले को संभवतः आज तक के इतिहास का सबसे बड़ा साइबर हमला माना जाता है।

अतः वर्तमान डिजिटल एवं सूचना-संचार तकनीकी के युग में, जब इंटरनेट का अत्यधिक प्रयोग बढ़ता जा रहा है, इन परिस्थितियों में एक बेहतर '**साइबर सुरक्षा**' की आवश्यकता है। साइबर सुरक्षा का तात्पर्य साइबर स्पेस की हमले, क्षति, दुरुपयोग आदि आर्थिक जासूसी से सुरक्षित करना है। साइबर अपराधों के बढ़ते हुए वैविध्य तथा गहनता को देखते हुए सभी राष्ट्रों को मिल-जुलकर इस समस्या के समाधान की ओर अग्रसर होने का प्रयास करना चाहिए, क्योंकि वैश्वीकरण सूचना एवं संचार तकनीकी के युग में सभी राष्ट्रों के समन्वित प्रयासों से ही इस समस्या का समुचित समाधान निकाला जा सकता है।

इसी दिशा में 2004 में '**बुडापेस्ट**' से अवांछित साइबर गतिविधियों पर रोक के लिये एक सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य साइबर अपराध से समाज को सुरक्षा उपलब्ध कराए जाने के लिए एक सामान्य नीति बनाना था। इसमें कुछ विशेष शक्तियों और प्रक्रियाओं का उल्लेख है, जिनमें हानिकारक कंप्यूटर नेटवर्क की खोज तथा उन पर रोक शामिल है। भारत में भी साइबर हमलों की बढ़ती संख्या को देखते हुए समय-समय पर इस दिशा में प्रयास किये गए हैं, जैसे- सूचना प्रौद्योगिकी (संशोधन) अधिनियम-2008, भारत की नई साइबर नीति-2013, सूचना प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा साइबर सुरक्षा के लिये एक संस्थान 'सर्ट इन' इत्यादि का प्रावधान किया गया है।

डिजिटल होती दुनिया में साइबर अपराध एक गंभीर एवं जटिल समस्या है। हैकरों द्वारा प्रायः उन्हीं कंप्यूटर नेटवर्कों में सेंध लगायी जाती है जिनका सुरक्षा-नेटवर्क कमजोर होता है। अतः तकनीक को उन्नत करते हुए तकनीकी रूप से सुदृढ़ नेटवर्क का निर्माण करना हमारी प्राथमिक आवश्यकता होनी चाहिए। इसके लिये आईटी तकनीकों, बायोमेट्रिक तकनीक प्रणाली इत्यादि का उपयोग करके साइबर अपराधों को रोका जा सकता है। साइबर सुरक्षा के आर्थिक पक्ष के तहत '**साइबर बीमा**' एक बेहतर प्रयास हो सकता है।

आज जब कि इंटरनेट क्रांति अपनी पाँचवीं पीढ़ी में प्रवेश कर गई है तो ऐसे में यदि हमने साइबर हमलों की चुनौती को पार कर इंटरनेट को सुरक्षित एवं भरोसेमंद बनाने में सफलता प्राप्त कर ली तो अवश्य ही सूचना की यह क्रांति हमारे लिये वरदान सिद्ध होगी।





पुरुष सुन्दर होते हैं !!!



श्रीमती संध्या कुमारी
पत्नी श्री सुरेन्द्र कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

पुरुष !! होते तो हैं सुन्दर...
हर रिश्ते में उनकी खूबसूरती का मानक
कुछ इस तरह होता है ।

कभी धीर, कभी गंभीर, कभी ठहाके तो कभी सिसकी ,
वो पिता है प्रेमी है या मित्र है जो भी है
पुरुष, पुरुष है और पुरुष !! सुन्दर होते हैं।

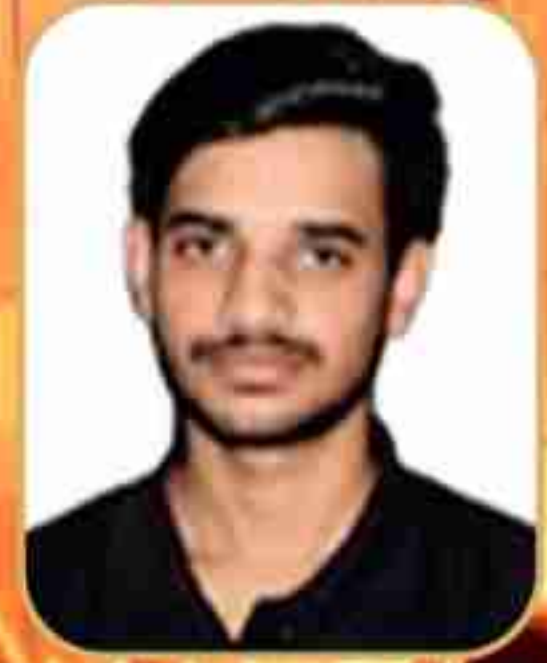
वहीं अब भी हैं कुछ स्त्रियाँ जो देख लेती है ,
पुरुष के आँसू, सुन लेती है
पुरुष के ठहाके के पीछे उसकी सिसकियाँ

गहरी साँस के साथ भर लेती है उसके भावनाएँ,
और उनके नजरों में वे बहन हैं माँ हैं
प्रेमिका है पत्नी है और सखियाँ भी,

पहचान लेती है, दिखाई न देने वाली कोमलता,
और जान लेती हैं पुरुष सुन्दर होते हैं,
उनकी छवि का प्रतिमान भिन्न होता है

पुरुष सुन्दर होते हैं।

करौली वाला मास्टर



श्री अभिषेक कुमार मीना
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



यह बात सन् 2003 की है, जब मैं तीसरी कक्षा में अपने मामा के यहाँ गाँव में था। उन दिनों वहाँ एक स्कूल हुआ करता था, जिसका सही नाम भी बहुत कम बच्चों को पता होगा क्योंकि सभी उसको "करौली वाले मारसाहब" के स्कूल के नाम से ही जानते थे। जब मैंने वहाँ एडमिशन तीसरी कक्षा में लिया तो बाकी बच्चों से पता चला कि इस स्कूल और गाँव के सभी बच्चों का करता-धरता, '**करौली वाला मास्टर**' ही है। पर यह नहीं पता था कि यह है कौन? बस सुन के मन में एक तस्वीर सी बना ली कि जो भी है, पर है बड़ी तोप चीज, जिससे सारे बच्चे डरते हैं और यह समझ लिया कि इससे बच के रहना है।

परिचय :- करौली वाला मास्टर, बाकी सब लोगों की तरह दिखने वाला साधारण-सा एक आदमी ही था पर उसने गाँव और स्कूल में अपने कार्यों से अलग पहचान बना ली थी, नाम था उनका "राजबहादुर सिंह जादौन"। वह रोज पढ़ाने के लिए करौली से आते और जाते थे तो लोगों ने उनको "करौली वाला मास्टर" बुलाना शुरू कर दिया और गाँव में उनकी पहचान इसी नाम से की जाने लगी और यही कारण है कि मैंने इस लेख का शीर्षक ये रखा।

बच्चों में इस नाम का इतना खौफ था कि जब भी वे गाँव के किसी रास्ते से निकलते तो सब घरों में घुसकर पढ़ने लग जाते और पकड़े जाने से बचने के लिए बच्चे पहले से ही ध्यान रखते कि, अब मारसाहब निकल लिए है, स्कूल से तो कभी भी किसी भी गली में से आ सकते हैं तो थोड़ी देर के लिए सब पढ़ने लग जाओ, अब उनके जाने के बाद ही खेलेंगे। कभी कभार कोई बच्चा जिद्द करता किसी चीज की तो घरवाले मनाने को बस एक ही नाम लेते और वे अपने आप सिमट कर बैठ जाता। हमारे घरवालों का काम उनके नाम ने काफी आसान बना दिया था। बाकी, बच्चों के लिए उनका नाम, शोले के गब्बर से एक तिल भी कम न था।

मेरा और मारसाहब का आमना-सामना :- मेरे ममेरे बड़े भाई-बहन पहले से ही उनके यहाँ स्कूल में पढ़ते थे, तो मामा निकल लिए एक दिन मुझे लेके मेरा भी दाखिला करवाने। जब हम स्कूल परिसर में घुसे तो मैंने देखा एक लड़के को नीम के पेड़ से उल्टा लटका के एक आदमी अच्छे से कूटा जा रहा है और यह सब देख के मैं थोड़ी देर के लिए पीला पड़ गया था और सोचने लगा कि ये कहा फंस गया। वास्तव में जो भी सुना था उनके बारे में आज तक, वह सब प्रमाण के तौर पर आज मैं देख भी रहा था, साथ में सोच रहा था कि 'मारसाहब' को लोग शायद 'मार-साहब' इसलिए बुलाते हैं। ऐसी चीजे देख के सबसे ज्यादा आश्चर्य घरवालों पर होता है, वे लोग ऐसा

मंजर दिखाके बोलते है, कि देख लों तुम लोग नहीं पढ़ोगे तो अगला नंबर तुम्हारा ही है।

वहा उन लोगो ने एक पट्टियों की बनी पाटोड़ 1 (पत्थर की पट्टियों का बना हुआ एक घर, नीचे चित्र संलग्न है।) में अपना कार्यालय बना रखा था और उसमें कुछ रजिस्टर लिखा पढ़ी का काम करने के लिए रखे हुए थे।

हम लोग उधर जाकर मारसाहब का इंतजार करने लगे। कुछ देर बाद वे आए और मामा ने बताया कि मारसाहब, ये अपना भाँजा है इसके मम्मी-पापा के यहा इसका मन नहीं लगता तो यह यहाँ पढ़ना चाहता है, तो इसका दाखिला कर दो। उन्होंने भी हाँ में जबाव दिया। फिर मामा ने कहा कि थोड़ा मारना मत इसे नहीं तो ये डर के कारण आएगा नहीं स्कूल और इसी एक बात का मुझे बेसब्री से इंतजार था। उन्होंने जवाब में जो कहा उसे सुन कर मेरे कलेजे को थोड़ी राहत मिली। उन्होंने कहा कि, "ऐसों है साहब हमकू कोन सो मारवे में मजा आय इन छिरेटनने, ऊ तो हम इनने बस सुधारवा कु कुटे। अब हम जो गृहकार्य देय बस वाकू करकेनी ली आय ई और का चाहिए हमें, हम तो औजू कतई हाथ नि लगाय थमारा छोरा के।" मन में तो मैं सोच रहा था कि "जे हिसाब से ई कूट रो हो वा छोरा है, लग तो नि रो मोय की याकू मजा नी आय कूटवा में।"

किस्सा बुखार का :- सावन के महीने की बात है जब बच्चे पतंग खूब उड़ाते है, और उड़ाने के लिए बीमारी की झूठी एप्लिकेशन लिखके छुट्टी ले लिया करते थे। अब एक दिन मेरी बड़ी ममेरी बहन प्रिया को सच में बुखार आ गया तो उस दिन मैंने मामा से अपनी तिगड़म लगाके उनको छुट्टी के लिए मना लिया और मैंने भी बुखार की झूठी एप्लिकेशन लिख के स्कूल भिजवा दी और पूरे दिन पतंग उड़ाई। शाम को मारसाहब करौली जाने के लिए निकले तो मुझे दूर से छत पर से ही दिख गए तो मैं पतंग छोड़ के बुखार में पड़ी दीदी के पास आके कंबल ओढ़ के सो गया। पर कहते है ना कि, जब गीदड़ की मौत आती है तो गाँव की और भागता है, वही मेरे साथ हुआ। संयोगवश मारसाहब उस दिन रास्ते से करौली जाते हुए घर आ गए। मामा से मिले और बोले कि रास्ते से जा रहा था सोचा कि आज पटेल साहब के यहाँ 2 बच्चे बीमार हो गए तो, हाल चाल पूछ आऊ कि क्या हुआ है और मैं यह सब बाते कंबल में ही सुन रहा था। आज मेरे सामने उनका नाम नहीं, बल्कि साक्षात वह खुद थे। वोह वहाँ उस दिन तकरीबन 1-1.5 घंटे रुके और मैं पूरे वक़्त कंबल में दुबके छिपा रहा। उनके द्वारा पकड़े जाने का डर इस कदर था कि मैं, सुबह से नाटक कर रहा था बीमार होने का और शाम होते-होते मुझे सचमुच बुखार चढ़ गया। जब वे वहाँ से चले गए तब जाकर मेरी सांस में सांस आई।

नीचे दिया गया चित्र पाटोड़ का है जो कि पट्टियों से निर्मित घर होता है, जो रहने के साथ साथ जानवरो का चारा भण्डारण के काम में आता है। पूर्वी राजस्थान में ज्यादातर लोग ऐसे ही घर उपयोग में करते थे। संलग्न चित्र विशाल भारद्वाज की आयी मूवी "पटाखा" के लेखक "चरण सिंह पथिक" जी के घर का है।





दोस्त अब थकने लगे हैं



श्री सुरेन्द्र कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

किसी का पेट निकल आया है,
किसी के बाल पकने लगे हैं...

सब पर भारी जिम्मेदारी है,
सबको छोटी-मोटी कोई बीमारी है!

दिनभर जो भागते दौड़ते थे,
वो अब चलते भी रुकने लगे हैं !

कल जो दोस्त सब साथ में
मिलकर बैठते थे,
अब वो अलग रहने लगे हैं !

पर ये हकीकत है ,
सब दोस्त थकने लगे हैं...

किसी को लोन की फिक्र है
कही हेल्थ टेस्ट का जिक्र है !

फुर्सत की सब को कमी है ,
आँखो मे अजीब सी नमी है !

कल जो प्यार के खत लिखते थे,
आज बीमे के फॉर्म भरने मे लगे हैं !

पर ये हकीकत है
सब दोस्त थकने लगे हैं...



बदलती संस्कृति



सुश्री आस्था दिओरा
लिपिक

बदलती संस्कृति एक महत्वपूर्ण विषय है जो हमारे समाज में गहरा प्रभाव डालता है। यह विशेष रूप से आधुनिकीकरण, विकास और तकनीकी प्रगति के साथ जुड़ा है। बदलती संस्कृति का अर्थ है कि समाज में सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक मान्यताएं, विचारधारा और आदतें समय के साथ परिवर्तित हो रही हैं।

आधुनिक युग में, तकनीकी उन्नति और व्यापक ग्लोबलीकरण के कारण, संस्कृति में अनेक परिवर्तन आए हैं। यह नए माध्यमों के साथ संचार की विधियों, विनिर्माण प्रक्रियाओं और जीवनशैली में परिवर्तन के रूप में दिखाई देता है। इसके साथ ही, युवा पीढ़ी का विचारधारा और मूल्यों में भी बदलाव आया है।

बदलती संस्कृति के परिणामस्वरूप, हमें अपनी पारंपरिक मूल्यों और संस्कृति को सुरक्षित रखने की आवश्यकता है। हमें अपने इतिहास, भाषा, कला, साहित्य और परंपरागत ज्ञान को महत्व देना चाहिए ताकि हमारी संस्कृति की धरोहर को संजीवित रखा जा सके।

इस प्रकार, बदलती संस्कृति को समझना और उसके साथ संघर्ष करना हमारे समाज के लिए आवश्यक है ताकि हम अपनी परंपराएँ और मूल्यों को बनाए रख सकें।



गुजरात

'द लैंड ऑफ लीजेंड्स'



पूजा शर्मा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भारत के पश्चिम में गुजरात राज्य है, जो देश के सबसे प्रसिद्ध पर्यटन प्रदेशों में से एक है। गुजरात प्राकृतिक दृश्य, धार्मिक स्थलों, ऐतिहासिक महत्व रखने वाली जगहों, स्थानीय स्वादिष्ट व्यंजनों से समृद्ध राज्य है। विश्व की सबसे प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता का उद्गम स्थल भी गुजरात है। गुजरात में पोरबंदर, गांधीनगर, सोमनाथ मंदिर, कच्छ, द्वारका मंदिर, वडोदरा और अक्षरधाम मंदिर आदि प्रसिद्ध पर्यटन स्थल मौजूद हैं। गुजरात को एशियाई शेरों का घर कहा जाता है। यहां के पर्यटन स्थलों के कारण इसे 'द लैंड ऑफ लीजेंड्स' भी कहते हैं। इस आर्टिकल के माध्यम से गुजरात के कुछ प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों का विवरण इस प्रकार है।

लक्ष्मी विलास पैलेस

लक्ष्मी विलास पैलेस भारत की सबसे राजसी संरचनाओं में से एक है और यह महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ III का निजी निवास स्थान था। बकिंघम पैलेस के चार गुना के बराबर आकार का सबसे बड़ा निजी आवास माना जाता है, जिसे वडोदरा यात्रा के दौरान हर पर्यटक को देखने जरूर जाना चाहिए। लगभग 700 एकड़ के क्षेत्र में फैला यह अभी भी वडोदरा के गायकवाड़ के शाही परिवार का घर है।



महल का निर्माण 1890 में किया गया था और इसे पूरा होने में लगभग बारह साल लगे थे। पैलेस के भीतर कई सुंदर इमारतें हैं जिनमें बैंक्वेट्स और कन्वेंशन, मोतीबाग पैलेस और महाराजा फतेह सिंह संग्रहालय भवन शामिल हैं।

सोमनाथ मंदिर

सोमनाथ मंदिर गुजरात के पश्चिमी तट पर सौराष्ट्र में वेरावल बंदरगाह के पास प्रभास पाटन में स्थित है। यह मंदिर भारत में भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंग मंदिरों में से पहला माना जाता है। यह गुजरात का एक महत्वपूर्ण तीर्थ और पर्यटन स्थल है। प्राचीन समय में इस मंदिर को कई विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा बार-बार ध्वस्त करने के बाद वर्तमान हिंदू मंदिर का पुनर्निर्माण वास्तुकला की चालुक्य शैली में किया गया।



यह मंदिर ऐसी जगह पर स्थित है जहां अंटार्कटिका तक सोमनाथ समुद्र के बीच एक सीधी रेखा में कोई भूमि नहीं है।



गिर नेशनल पार्क: जूनागढ़ से लगभग 80 किलोमीटर की दूरी पर स्थित "गिर नेशनल पार्क" गुजरात में एक वन्यजीव अभयारण्य है। इसकी स्थापना एशियाटिक शेरों की सुरक्षा के लिए की गई थी, गिर राष्ट्रीय उद्यान और वन्यजीव अभयारण्य को सासन गिर नेशनल पार्क के नाम से भी जाना जाता है। गिर राष्ट्रीय उद्यान भारत के गुजरात स्टेट के तालाला गीर के पास स्थित है। इस पार्क को 1965 में स्थापित किया गया था।



रन ऑफ कच्छ: कच्छ का रन या रन ऑफ कच्छ गुजरात के कच्छ शहर में उत्तर तथा पूर्व में फैला हुआ दुनिया का सबसे बड़ा नमक से बना रेगिस्तान है जो 'रन ऑफ कच्छ' के नाम से मशहूर है। अमिताभ बच्चन द्वारा कही गई लाइन **"कच्छ नहीं देखा तो कुछ नहीं देखा"** एकदम सही प्रतीत होती है। कच्छ का रण एक विशाल क्षेत्र है, जो थार रेगिस्तान का ही एक हिस्सा है। रन ऑफ कच्छ का अधिकांश भाग गुजरात में है, जबकि कुछ भाग पाकिस्तान में है। इस व्हाइट डेजर्ट की खास बात ये है कि मानसून के आते ही गर्मियों के बाद कच्छ की खाड़ी का पानी इस रेगिस्तान में आ जाता है, जो सफेद रण एक विशाल समुद्र की तरह दिखाई देता है। वाकई नमक के इस रेगिस्तान को देखना जितना अद्भुत है इसके बनने की कहानी और भी दिलचस्प है। जुलाई से लेकर अक्टूबर-नवंबर तक कच्छ के महान रण का ये हिस्सा एक समुद्र जैसा प्रतीत होता है। यहां हर साल आयोजित होने वाले रन उत्सव दुनिया भर में मशहूर है।

सापुतारा हिल स्टेशन: सापुतारा पश्चिमी घाटों में गुजरात के डांग जिले में एक विचित्र छोटा हिल स्टेशन है, जो अपने खूबसूरती, हरे भरे जंगलों, पहाड़ों और झरनों के लिए फेमस है। सापुतारा गुजरात में घूमने के लिए सबसे अच्छी जगहों में से एक है, जो अपने पर्यटक आकर्षणों और प्राकृतिक सुन्दरता से हर साल लाखों टूरिस्ट्स को अट्रेक्ट करता है। यह हिल स्टेशन समुद्र तल से 875 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है।



अंबाजी मंदिर : गुजरात के बनासकांठा जिले में स्थित अंबाजी मंदिर दुर्गा माता का प्रसिद्ध मंदिर है। गुजरात-राजस्थान सीमा पर स्थित अंबाजी मंदिर भारत देश के प्राचीन मंदिरों में से एक है। मां भवानी के 51 शक्तिपीठों में से एक इस मंदिर के प्रतिमां के भक्तों में अपार श्रद्धा है। कहा जाता है कि यहां मां सती का हृदय गिरा था, जिसका उल्लेख तंत्र चूड़ामणि में भी मिलता है। जानकर हैरत होगी कि इस मंदिर के गृभग्रह में



मां की कोई प्रतिमा नहीं है, बल्कि यहां मां के पवित्र श्रीयंत्र की पूजा मुख्य रूप से की जाती है। खास बात यह है कि यह श्रीयंत्र सामान्य आंखों से दिखाई नहीं देता और न ही इसका फोटो लिया जा सकता है। इसकी पूजा केवल आंखों पर पट्टी बांधकर ही की जाती है। अंबाजी की असली सीट गब्बर पहाड़ी के ऊपर है। गब्बर पर्वत के टॉप पर देवी का एक छोटा सा मंदिर है जहां 999 सीढ़ियां चढ़कर ऊपर तक पहुंचा जा सकता है।

नागेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर: नागेश्वर ज्योतिर्लिंग गुजरात में सौराष्ट्र के तट पर द्वारका शहर और बेट द्वारका द्वीप मार्ग पर स्थित हैं। भगवान शिव को समर्पित यह 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक हैं। नागेश्वर ज्योतिर्लिंग दर्शन में आप भगवान शिव की 25 मीटर लम्बी एक बैठी हुई मूर्ति के दर्शन कर सकते हैं। मंदिर की मूर्ति काफी मोटी हैं इसलिए इसे मोटेस्वर के नाम से भी जाना जाता हैं। नागेश्वर ज्योतिर्लिंगको '**दारुकवाना**' के नाम से भी जाना जाता हैं, जो कि भारत में एक प्राचीन महाकाव्य का नाम है।



द्वारकाधीश मंदिर: द्वारकाधीश मंदिर जिसे **जगत मंदिर** भी कहा जाता है, एक चालुक्य शैली की वास्तुकला है जो कि भगवान श्री कृष्ण को समर्पित है। द्वारका शहर का इतिहास महाभारत काल के द्वारका साम्राज्य से जुड़ा हुआ है। पांच मंजिला मंदिर चूना पत्थर और रेत से निर्मित भव्य और अद्भुत है। माना जाता है कि 2200 साल पुरानी वास्तुकला, वज्रनाभ द्वारा बनाई गई थी, जिन्होंने इसका निर्माण भगवान कृष्ण द्वारा समुद्र से प्राप्त हुई भूमि पर किया था। मंदिर के भीतर अन्य मंदिर हैं जो सुभद्रा, बलराम और रेवती, वासुदेव, रुक्मिणी और कई अन्य देवी-देवताओं को समर्पित हैं।



भड़केश्वर महादेव मंदिर: भगवान शिव को समर्पित भड़केश्वर महादेव मंदिर, एक प्राचीन मंदिर है, जो लगभग **5000 साल** पुराना है, जिसे अरब सागर में पाए गए एक स्वयंभू शिवलिंग के चारों ओर बनाया गया था। मंदिर हर साल मानसून के दौरान समुद्र में डूब जाता है, जिसे श्रद्धालु प्रकृति की अभिषेक की धार्मिक प्रक्रिया के रूप में मानते हैं। पूरे साल मंदिर अपने आकर्षण और प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता है।



रानी की वाव : रानी की वाव गुजरात, भारत के पाटन शहर में स्थित एक जटिल रूप से निर्मित बावड़ी है। यह सरस्वती नदी के तट पर स्थित है। रानी की वाव को 11वीं शताब्दी के राजा भीमदेव प्रथम की स्मृति में बनवाया गया था। इसे 22 जून 2014 को यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों की सूची में शामिल किया गया। 11वीं सदी में निर्मित इस वाव को यूनेस्को की विश्व विरासत समिति ने भारत में स्थित सभी बावड़ी या वाव (स्टेपवेल) की रानी का भी खिताब दिया है। इसे जल प्रबंधन प्रणाली में भूजल संसाधनों के उपयोग की तकनीक का बेहतरीन उदाहरण माना है।



चंपानेर और पावागढ़ पुरातत्व पार्क : यूनेस्को विरासत स्थल, चंपानेर और पावागढ़ को अक्सर गुजरात के सबसे आकर्षक ऐतिहासिक आकर्षणों में एक साथ रखा जाता है। पावागढ़ पहाड़ी की चोटी पर स्थित है जो चंपानेर के आधार पर स्मारकों के फैलाव को देखता है। यह जोड़ी 8वीं से 14वीं शताब्दी के किलों, मस्जिदों, स्मारकों, मकबरों, मेहराबों, मंदिरों, और बावड़ियों से युक्त एक समृद्ध विरासत स्थल बनाती है। चंपानेर सदियों से अपरिवर्तित एकमात्र इस्लामिक-मुगल शहर है, जो उस युग की वास्तुकला का प्रामाणिक स्वाद प्रदान करता है।

इसके बगल में पावागढ़ पहाड़ी पर कालिका माता मंदिर है।

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी: प्रसिद्ध भारतीय मूर्तिकार राम वी सुतार द्वारा डिजाइन की गई स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, 18 वीं शताब्दी के सबसे सम्मानित भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों में से एक सरदार वल्लभभाई पटेल की एक विशाल प्रतिमा है।

यह प्रतिमा सरदार वल्लभभाई पटेल के भारत के दृष्टिकोण का प्रचार करने और उनकी देशभक्ति और स्वतंत्रता संग्राम के माध्यम से भारत के नागरिकों को प्रेरित करने के लिए बनाई गई है।



लगभग 790 फीट (आधार सहित) की ऊंचाई पर खड़ी मूर्ति, दुनिया की सबसे ऊंची मूर्ति है जो अंतरिक्ष से भी देखी जा सकती है।



पालीताना: पालीताना भारत के गुजरात राज्य के भावनगर ज़िले में स्थित नगर है। पालीताना शत्रुंजय नदी के तट पर शत्रुंजय पर्वत की तलहटी में स्थित जैन धर्म का प्रमुख तीर्थ है। जैन मंदिरों के लिए प्रसिद्ध पलीताना में पर्वत शिखर पर भव्य 863 जैन मंदिर हैं। पाँच प्रमुख तीर्थों में से एक शत्रुंजय तीर्थ की यात्रा करना प्रत्येक जैन अपना कर्त्तव्य मानता है। पालीताना का प्रमुख व सबसे खूबसूरत मंदिर जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का है।

मोढेरा सूर्य मंदिर: गुजरात के मेहसाना जिले के “मोढेरा” नामक गाँव में पुष्पावती नदी के किनारे प्रतिष्ठित है। यह सूर्यमंदिर भारतवर्ष में विलक्षण स्थापत्य एवम् शिल्प-कला का बेजोड़ उदाहरण है।

इस मंदिर परिसर के मुख्य तीन भाग हैं; गूढमण्डप (मुख्य मंदिर), सभामण्डप तथा कुण्डजलाशय। गुजरात के पर्यटन निगम के द्वारा जनवरी के तीसरे सप्ताह में उत्तरायण त्यौहार के बाद मंदिर में '**उत्तरार्ध महोत्सव**' मनाया जाता है।

जिसमें प्रत्येक वर्ष तीन दिवसीय नृत्य महोत्सव (**मोढेरा नृत्य समारोह**) का आयोजन किया जाता है।



अक्षरधाम - गांधीनगर



हमराही

नवीन खींची
लेखापरीक्षक

सुनो, एक जगह ढूँढी है मैंने, उस ऊँचे वाले पहाड़ पर जहाँ से सारा शहर दिखाई देता है। किसी रोज़ तुम और मैं साथ बैठ कर वहाँ एक शाम बिताएंगे। कुछ तुम अपनी अधूरी ख्वाइशें सुनाना, कुछ मैं अपनी नाकामियां बताऊंगा। तुम बताना मुझे कि कैसे पूरी शिद्दत के बाद भी तुम्हारे सपनों की दुनिया तहस-नहस हो गए, मैं भी बतलाऊंगा तुम्हें कि कब-कहाँ हालतों ने मुझे किस तरह मजबूर किया।

मुझे कम बोलने की आदत है तो तुम ये न समझना कि मुझे तुम्हारी कहानियों में दिलचस्पी नहीं। तुम फ़िक्र न करना मैं वो भी समझ लूँगा जो तुम कह नहीं पाओगी।

फिर मुस्कुरा कर हम कह देंगे कि ज़िन्दगी मे यूँ ही होता है, मंज़िल हासिल हो ये ज़रूरी नहीं, मंज़िल के लिए बेहिसाब कोशिश करना, मंज़िल की राहों को गुलशन सा सजाना, उनमे ओस की बूँदों की माला सी सुन्दर यादे बनाना, मंज़िल की जुस्तज़ु में खो जाना और उसी में खुद को पा लेना ही तो ज़िन्दगी है। फिर ज़िन्दगी के भारी गणित को छोड़ थोड़ी देर पहाड़ के शांत वातावरण को महसूस करेंगे, सामने वाली पहाड़ी पर झोपड़ी किसने बनाई होगी, कौन उसमें रहता होगा, इसके बारे में बात करेंगे। अपने-अपने घर जाते हुए उपर आसमान में पक्षियों के झुण्ड और नीचे भगदड़ करती मोटर गाड़ियों की रैली देखेंगे।

जब शाम ढलने लगेगी, सूरज अपनी रौशनी समेटने लगेगा और सर्द हवाएं शरीर को महसूस होने लगेगी तो मैं तुम्हारे कंधे पर हाथ रख तुम्हें अपने नज़दीक खींच लूँगा। उसी पल हम दोनों एक नया ख्वाब बुनेंगे, एक नए मंज़िल देखेंगे और वादा करेंगे उसे परा करने की बेहिसाब कोशिशें करने का और एक भरोसा ये भी रहेगा कि इस बार सफ़र और भी ज्यादा खूबसूरत होगा क्योंकि साथ होगा एक दूसरे का।

हिंदी पखवाड़ा आयोजन 2024

पुरस्कार विजेताओं की सूची

1. हिंदी सुलेखन

क्रं.सं.	नाम	पदनाम	अनुभाग	स्थान	राशि
1.	श्री जय सिंह राठोड	लेप	प्रशासन	प्रथम	रु 1200/-
2.	सुश्री कोमल मान्दलिया	लेप	ओ ए डी II	द्वितीय	रु 1000/-
3.	सुश्री शिवानी पटेल	लेप	ओ ए डी I	तृतीय	रु 800/-
4.	श्रीमति पूजा टांक	व लेप	जी ओ एम	सांत्वना	रु 500/-

2. हिंदी निबंध लेखन (हिंदी भाषी)

क्रं.सं.	नाम	पदनाम	अनुभाग	स्थान	राशि
1.	श्रीमति पूजा शर्मा	स.ले.प.अ	फाप	प्रथम	रु 1200/-
2.	श्री शंकुल अग्रवाल	लेप	सम्पदा	द्वितीय	रु 1000/-
3.	श्री लोकेश शर्मा	स.ले.प.अ	प्रशासन	तृतीय	रु 800/-

3. हिंदी निबंध लेखन (अहिंदी भाषी)

क्रं.सं.	नाम	पदनाम	अनुभाग	स्थान	राशि
1.	श्रीमति रेखा टी ब्लोच	स. पर्य.	फा	प्रथम	रु 1200/-
2.	सुश्री आस्था दिओरा	लिपिक	बिल्स	द्वितीय	रु 1000/-
3.	श्री खंजन त्रिवेदी	वरि. लेखापरीक्षक	बिल्स	तृतीय	रु 800/-

4. प्रशासनिक शब्दावली अनुवाद

क्रं.सं.	नाम	पदनाम	अनुभाग	स्थान	राशि
1.	श्रीमति शेफाली जैन	स.ले.प.अ	प्रशासन	प्रथम	रु 1200/-
2.	श्रीमति पूजा शर्मा	स.ले.प.अ	फाप	द्वितीय	रु 1000/-
3.	श्री वैभव जोशी	स.ले.प.अ	आई काल	तृतीय	रु 800/-
4.	श्री शेर सिंह मीना	स.ले.प.अ	फाप ब	सांत्वना	रु 500/-

5. टिप्पण एवं मसौदा लेखन (हिंदी भाषी)

क्रं.सं.	नाम	पदनाम	अनुभाग	स्थान	राशि
1.	सुश्री शिवानी अग्रवाल	लेप	प्रशासन	प्रथम	रु 1200/-
2.	सुश्री अंकिता	लेप	फा	द्वितीय	रु 1000/-
3.	श्री आनंद गट्टानी	स.ले.प.अ	फा	तृतीय	रु 800/-

6. टिप्पण एवं मसौदा लेखन (अहिंदी भाषी)

क्रं.सं.	नाम	पदनाम	अनुभाग	स्थान	राशि
4.	श्रीमति रेखा टी ब्लोच	स. पर्य.	फा	प्रथम	रु 1200/-
5.	सुश्री आस्था दिओरा	लिपिक	बिल्स	द्वितीय	रु 1000/-
6.	श्री नीलेश हजरनीश	स. पर्य.	बिल्स	तृतीय	रु 800/-

7. हिंदी पत्र लेखन

क्र.सं.	नाम	पदनाम	अनुभाग	स्थान	राशि
1.	श्री आनंद गट्टानी	स.ले.प.अ	फा	प्रथम	रु 1200/-
2.	श्री संदीप चौधरी	स.ले.प.अ	आर.टी.सी	द्वितीय	रु 1000/-
3.	श्री दीपेन्द्र राजपूत	स.ले.प.अ	ओआईओ एस	तृतीय	रु 800/-
4.	श्री रुपेन्द्र सिंह नरुका	स.ले.प.अ	प्रशासन	सांत्वना	रु 500/-

8. हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम	पदनाम	अनुभाग	स्थान	राशि
1.	श्री अभिषेक गुप्ता	स.ले.प.अ	प्रशासन	प्रथम	रु 1200/-
2.	सुश्री अर्चना	स.ले.प.अ	फा	द्वितीय	रु 1000/-
3.	श्री दीपक पंकज	स.ले.प.अ	बिल्स	तृतीय	रु 800/-
4.	सुश्री प्रीति सिंगारिया	लेप	बिल्स	सांत्वना	रु 500/-

9. पोस्टर चित्रकारी प्रतियोगिता (कक्षा 1 से 5 तक)

क्र.सं.	नाम	अभिभावक का नाम	अनुभाग	स्थान	राशि
1.	सुश्री लक्षिता	श्री संजय कुमार	हिंदी अनुभाग	प्रथम	रु 1200/-
2.	सुश्री कृशा त्रिवेदी	श्री खंजन त्रिवेदी	बिल्स	द्वितीय	रु 1000/-
3.	सुश्री रिदा ब्लोच	श्री तारीक ब्लोच	बिल्स	तृतीय	रु 800/-

10. पोस्टर चित्रकारी प्रतियोगिता (कक्षा 6 से 10 तक)

क्र.सं.	नाम	अभिभावक का नाम	अनुभाग	स्थान	राशि
1.	सुश्री भाविनी	श्री संजय कुमार	हिंदी अनुभाग	प्रथम	रु 1200/-
2.	सुश्री सृष्टि रानी	श्री सुरेन्द्र कुमार	फाप	द्वितीय	रु 1000/-
3.	सुश्री तान्या ब्लोच	श्री तारीक ब्लोच	बिल्स	तृतीय	रु 800/-

वर्ष 2023-24 के लिए राजभाषा हिंदी में कार्य करने हेतु प्रोत्साहन राशि विजेताओं की सूची

प्रथम पुरस्कार

क्र.सं.	नाम	पदनाम	अनुभाग	कुल शब्दों की संख्या	पुरस्कार राशि
1.	श्रीमति रेखा टी. ब्लोच	सहायक पर्यवेक्षक	फा-1	40971	रु 5000/-
2.	श्री दीप राजगौर	वरि. लेखापरीक्षक	प्रशासन	39952	रु 5000/-

द्वितीय पुरस्कार

1.	श्री प्रबुद्ध सिंह	लेखापरीक्षक	प्रशासन	38363	रु 3000/-
2.	श्री नीरव ओजा (*हिंदीतर कार्मिक 20% अतिरिक्त अंक)	लेखापरीक्षक	ए.पी.एम	25840	रु 3000/-
3.	सुश्री अंकिता	लेखापरीक्षक	फा-1	26223	रु 3000/-

तृतीय पुरस्कार

1.	सुश्री शिवानी अग्रवाल	लेखापरीक्षक	प्रशासन	26100	रु 2000/-
2.	श्री रुपेन्द्र सिंह नरुका	स.ले.प.अ.	प्रशासन	26190	रु 2000/-
3.	श्री विपुल के. लुखेल	सहायक पर्यवेक्षक	सा.का.प्र	23036	रु 2000/-
4.	श्री अंकित त्यागी	स.ले.प.अ.	टी एस सी	22733	रु 2000/-
5.	श्री बी.एम.राधनपरा	वरि. लेखापरीक्षक	प्रशिक्षण केंद्र	21330	रु 2000/-



कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय व्यय)
Office of the Director General of Audit (Central Expenditure)
बी जी ए सी नगर भवन, इन्द्रप्रस्था एस्टेट, नई दिल्ली-110 002
DGACR Building, Indraprastha Estate, New Delhi - 110 002

सं.रा.आ.अ/2-9/प्रशंसा पत्र/2023-24/ 931

दिनांक: 29.02.2024

सेवा में

29 FEB 2024

हिन्दी अधिकारी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेव-1), गुजरात
एनेक्सी बिल्डिंग, एस कोर्स रोड, राजकोट, गुजरात-360001.

विषय: हिंदी पत्रिका "दांडी" के पांचवें अंक की पावती सह प्रशंसा पत्र।

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिन्दी पत्रिका "दांडी" के पांचवें अंक की प्रति इस कार्यालय को प्राप्त हुई है, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण आकर्षक है साथ ही इसकी साज-सज्जा सुंदर भी अति उत्तम है। पत्रिका में सभी लेख, कवित्तए, प्रेरक प्रसंग आदि पठनीय, रोचक एवं जानकारीयुक्त हैं। पत्रिका में सभी रचनाएं उत्तम स्तर की हैं।

कार्यालय के प्रायः सभी वर्ग के कर्मिकों ने अपनी मौलिकता से पत्रिका को सुसज्जित किया है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

हरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)



Ph : 91-11-23702422
Fax : 91-11-23702271

e-mail : dgace@icag.gov.in
Website: https://icag.gov.in/content/new-delhi-4/en

54249-30/20-2-24

50

महालेखाकार (ले व ह), केरल का कार्यालय, तिरुवनंतपुरम
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E), KERALA,
THIRUVANANTHAPURAM

सं. हिंदी कक्ष/पत्रिका समीक्षा/2023-24/0258169/090

दिनांक 05.02.2024

सेवा में

हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1),
एनेक्सी बिल्डिंग, एस कोर्स रोड,
गुजरात, राजकोट- 360001



महोदय/महोदया,

विषय : हिंदी गृह पत्रिका "दांडी" के पांचवें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

संदर्भ : पत्र सं. लि.क./गृ.प./2023-24/56/खंड-V/107 दिनांक 04.01.2024.

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "दांडी" के पांचवें अंक की प्राप्ति हुई है, धन्यवाद। पत्रिका का कवरेज व रूपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं पाठकों के लिए जानकारीयुक्त एवं मन को सुभाषित होती हैं।

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि के बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं इस पत्रिका के संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

हिंदी अधिकारी

आपके द्वारा प्रेषित प्रशंसा पत्र

8115 सं-39
26-02-24

52



प्रधान निदेशक रक्षा - वाणिज्यिक
लेखापरीक्षा का कार्यालय, बंगलूर-560001
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF
AUDIT DEFENCE-COMMERCIAL, BENGALURU-560001.

दि.पत्रा.2023/24/119

दिनांक - 21/02/2024

सेवा में

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-1) गुजरात,
राजकोट-360001

विषय:- प्रशंसा पत्र।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की वार्षिक हिन्दी ई-पत्रिका "दांडी" के पांचवें अंक की प्रति इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्त हुई है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यालयधन की दिशा में एक स्थानीय प्रयास है। पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएं।

धन्यवाद,



भवदीय,

हिन्दी अधिकारी



भारतीय लेखा-वश लेखापरीक्षा विभाग
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
कार्यालय वार्षिक वार्षिक लेखापरीक्षा
Office of The Director General of Commercial Audit, Mumbai
C-11, Ashok Bhawan, 8th floor, Seaface - 8th floor, Mumbai - 400 011
Telephone: 622-6945500, Email: pdc@mca.gov.in

सं. डी.जी.सी.ए.पत्र/हिंदी पत्रिका/1190

दिनांक: 18/03/2024

19 MAR 2024

सेवा में

हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1),
राजकोट, गुजरात - 360001

विषय: हिंदी पत्रिका "दांडी" के 5वें अंक के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "दांडी" के 5वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका आवरण पृष्ठ से अंतिम पृष्ठ तक अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं रोचक एवं ज्ञानप्रद तथा उत्प्रेरक की हैं। विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएं प्रशंसनीय हैं:-

क्र.सं.	रचनाकार	रचनाएं
1.	श्री डी. डी. खोड	एक पैगम हिंदी के जन्म
2.	श्री संजय कुमार	परिवर्तन जीवन का नियम है
3.	श्रीमती सुनील	जीवन इन्डि, सनय धर्म
4.	सुनील नंदनी	स्वयं की खोज, जीविकी वर सगर, प्रेरक प्रसंग
5.	श्री विशेष विचार	भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेख विभाग में कर्मिक अनुसंधान के रूप में नियुक्ति पर ध्यान पर अपने स्वयं के लिए संतोधान
6.	श्री टीपक गुप्ता	आधुनिक सामाजिक मंच
7.	श्री सुरज कुमार ठास	बचिपथ अंतर्निहित कहने आती है
8.	श्री राज कुमार सन	मैं तो बच हूँ
9.	श्री एन. बी. खज	"विचारों में दूर रहें"
10.	श्रीमती प्रिती अग्रवाल	मरी की राख

विभिन्न गतिविधियों से संबंधित खचापिरी व प्रस्तुतिकरण सहजनीय है। पत्रिका प्रकाशन के उच्चतम अतिथि की वसुध के सह पत्रिका के कुशल संपादन एवं प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रकाशन

हिंदी पखवाड़ा - 2024 समापन समारोह



गीत गायन



कार्यालय से सेवानिवृत्त कर्मिको का विदाई समारोह



कार्यालय में हिंदी कार्यशाला का आयोजन



बच्चों के लिए पोस्टर चित्रकारी प्रतियोगिता



हिंदी पखवाड़ा -2024 - वाद-विवाद प्रतियोगिता



निबंध प्रतियोगिता



पत्र लेखन प्रतियोगिता



सुलेखन प्रतियोगिता

हिंदी पखवाड़ा - 2024 के समापन पर महालेखाकार महोदय द्वारा पुरस्कार वितरण



हिंदी पखवाड़ा - 2024 के समापन पर
वरिष्ठ उप महालेखाकार का संबोधन



हिंदी पखवाड़ा - 2024 के समापन पर महालेखाकार महोदय द्वारा पुरस्कार वितरण



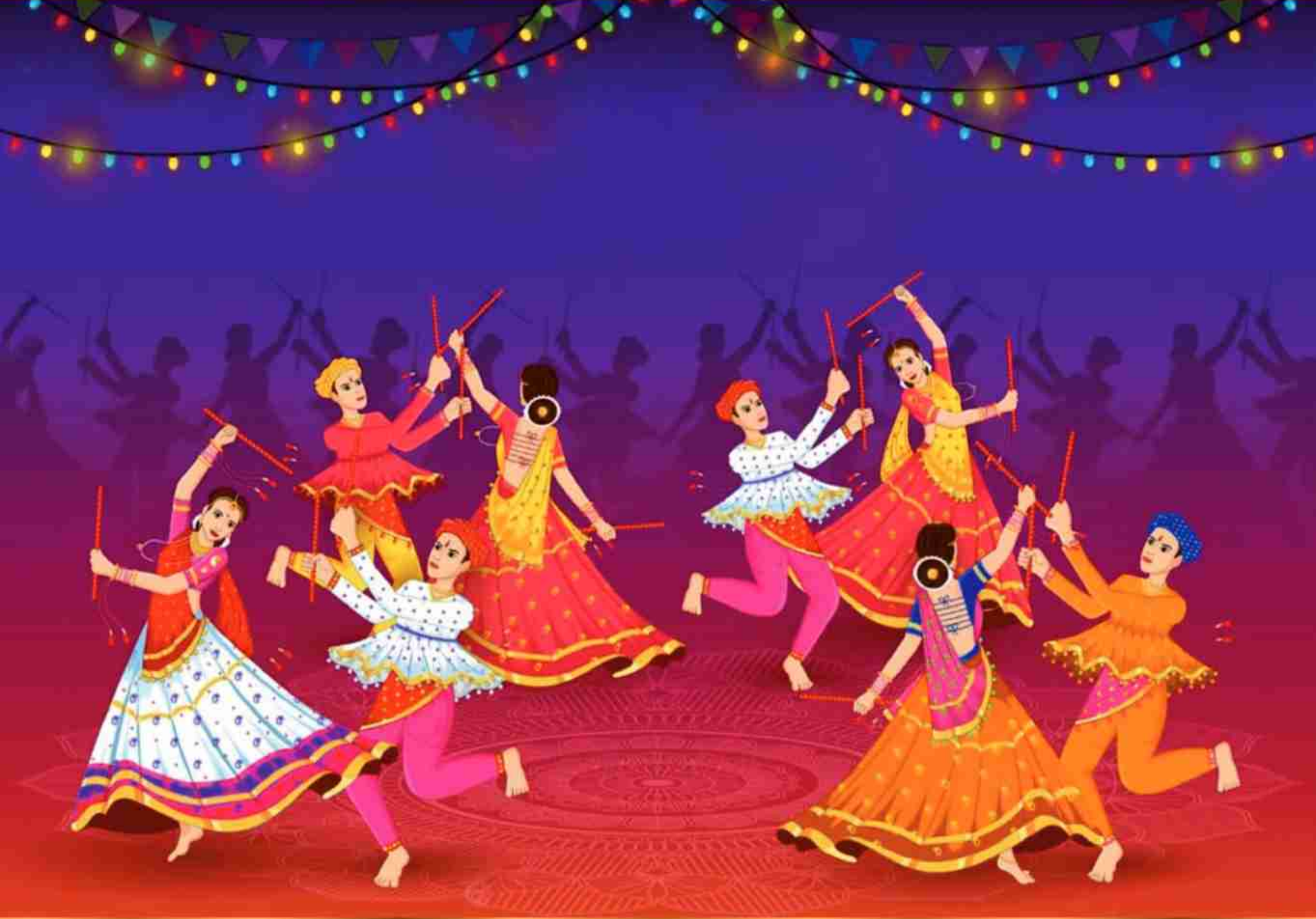
राजभाषा परिवार के साथ आदरणीय महालेखाकार एवं वरिष्ठ उप महालेखाकार महोदय



बायें से दायें : श्री विशेष कुमार त्रिपाठी (कनिष्ठ हिंदी अनुवादक), सुश्री नंदनी साव, (कनिष्ठ हिंदी अनुवादक)
श्री संजय कुमार (हिंदी अधिकारी), श्री अनुभव कुमार सिंह (महालेखाकार-मध्य)
श्री संतोष वी. खेडकर (वरिष्ठ उप महालेखाकार), श्री कल्पेश एम. राठोड (उप महालेखाकार)
श्री वि. बी. बागुल (उप महालेखाकार)

दाही

छठवां अंक, वर्ष- 2024



कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1)
एनेक्सी बिल्डिंग, रेसकोर्स रोड
गुजरात, राजकोट- 360001